

तंत्री
चीमनलाल गोपाळदास शाह

ता. १५-८-४३ : अमदाबाद

वर्ष १८ अंक : १२] [कमांक : २१६

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar - 382 007.
Ph. : (079) 23276252, 23276204-05
Fax : (079) 23276249.

विषय-दर्शन

क्रमांकः	लेखः	लेखकः	पृष्ठः
१.	परिग्रहनुं पापः	पू. मु. श्री. चंद्रप्रभसागरज्ञः	२१७
२.	प्रतिकारनां पगलां अने सङ्कलनाः	संपादकीयः	२१८
३.	ज्ञवा अने ज्ञवा होः	पू. मु. श्री. हंससागरज्ञः	२२३
४.	अज्ञाननो अंजनमः	पू. मु. श्री. महाप्रभविजयज्ञः	२२६
५.	उपाध्याय विवेकसमुद्र विरचित नरवर्मचरितः	श्री. अंवरवालज्ञ नाहटा :	२२८
६.	बंधुर्भ मङ्गल श्री चिंतामणि प्रतिष्ठा स्तवनः	सं. श्री. अगरवलज्ञ नाहटा :	२३५
७.	ग्रन्थासपाटयुना शिलालेखोः	सं. पू. श्री. चंद्रनसागरज्ञः	२३७
८.	श्री. लैन सत्य प्रकाशनुं अठारमा वर्षाणुं विषय-दर्शनः		२३८
९.	विवरितिः	संपादकीयः	दार्ढीव चौ८ श्रीजुं



विनांति

आ अंडे 'श्री लैन सत्य प्रकाश' मासिक प्रेताना ज्ञवनकाण्डनुं अठारमुं वर्षा पूरुं करे छे; त्यारे अमे इरीथी पू. आचार्याहि मुनिवरो, अने श्री लैन संघने याह आपीओ के—मासिक प्रेतानुं आयुष्य लंभावी शके अने सर्वथा पगलर भनी शके ए रीते अने महाद करवानी जडेर छे. आ पर्यावणा वर्षा प्रसंगे ते ते स्थगना श्री संघो समितिने आर्थिक सहाय आपवा प्रेताथी भनतुं करशे एवी आशा राखीओ छीओ.

—संपादक



॥ ૪ અહ્મ ॥

અખિલ ભારતવર્ષીય જैન શ્રેતાભર મૂર્તિપૂજક
મુનિસમેલન સંસ્થાપિત

શ્રી જैનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિનું માસિક મુખ્યપત્ર
જૈશિગમાઈની વાડી : ધીકાંટા રોડ : અમદાવાદ (ગુજરાત)

વર્ષ : ૧૮

વિકલ્પ સં. ૨૦૦૬ : વીર નિ. સં. ૨૪૭૬ : ઈ. સ. ૧૬૫૩

ક્રમાંક

અંક : ૧૨

ભાડારવા સુદ્ધિ છ : અગણવાર : ૧૫ સપ્ટેમ્બર

૨૧૬

પરિયાહનું પાપ

લેખક : પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચંદ્રેપ્રલસાગરજી

એક સમય એવો હતો જ્યારે માનવી આજીવિકા મેળવીને નિરાત અનુભવો. નિરાતની વેળાએ એ આપણ પોતો નહિ પરંતુ સંગીત, સાહિત્ય આહિ કણાએથી પોતાના ભુજાયેલા જનને ઉભા આપતો, ચિંતનને નવાડુરિત કરતો અને એ દારા માનવતાના કુંદુંધરીને ઉજાવળ અનાવવા પ્રયત્નશીલ રહેતો. નિરાતનો સદૃપ્યોગ ન કરતાર માનવી પણ જીવો ગણ્યતો. સમાજની એ રિથિતને ડાઇ કવિયે પોતાના શર્ષેદ્ભા આ રીતે ચિત્રસ્થ કરી છે : “સજીત-સાહિયકલાવિહીન; સાક્ષાત् પણું પુછુ-વિષાળહીનઃ ॥”

આજે સમય પલટાયો છે. માનવીને જણે નિરાતની વેળા જ નથી. ધનની પાઠળ એ જમે છે. જોઈ શકાય એમ છે કે, પરિયાહની વૃત્તિને આખીન માનવી ડેટલી હુદે પહોંચ્યો છે અને એ ડેવી ઉપમાને લાયક ગણ્યત તે નીચે આપેલી સરખામણીથી સમલય છે.

*

માણસે સિહને જગતી, હિસક અને કૂર એવાં ત્રણ હલકા વિરોધશો આપ્યા છે અને અનો જ અતિસ્પર્હા શહેરી, અંડિસક અને સૌમ્ય એવાં તરણું શેષ વિરોધશો પોતાની જવાનાએ વાપર્યાં છે. પરંતુ આ વિરોધશો ડેના માટે ડેટલાં સાર્થક છે એનો વિચાર કરીએ. સિંહ કાર્યારે શિકાર કરે ?

સિહ ભૂખ્યો હોય ત્યારે જ શિકાર કરે છે. ભૂખ ન હોય તો એની ભાજુમા થઈની એક નાતું બાળક પસાર થાય તો ય એની સામે એ મીઠ માડતો નથી કારણું કે એનું રેટ કરેલું છે. એને સંગ્રહ કરવાની જરૂર પડતી નથી.

ત્યારે મનુષ્ય એનો કાળાંગનર કરનારા, અનનતે જોંચો નીચો કરનારા, વસુઓને અધ્યારચિત સંગ્રહ કરનારા એ એ બધા શું ભૂખ્યા છે ? બીજાના અમથી કરોડાના માલિક અન્યા જતાએ લુંટ અટકતી નથી. જેમ ધન વધતું જય છે તેમ શિકારીવૃત્તિ વિકલ્પી જાન છે તેણું કારણ શું ? કારણ એ જ કે એને ગેર અરવું નથી પણ મોટા પડારા કરવા છે.

२१८]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १८

आम ४० संतोषभां भग्न २५२२ रुद्रनार सिंह जंगली गण्याय अने असंतोषथी जगतने लूट-नार शहेरी गण्याय ।

सिंह कोना शिकार करे ?

सिंह सामान्य रीते डाई क्षुद्र प्राणीतो शिकार करतो नथी. ए तो समेवाडियानो ज शिकार करे. त्यारे स्वार्थी भनुध्य घोताना जेवा समृद्ध माणुसने छेतरवा जय ता अने ज अना शिकार बनवुँ पडे; अने छेतरपींडी उधाडी पडी जय. आर्थि घोताथी जेतरतो होय अने शीशाभां उतारवानो. ए प्रथत फरे. लोगाने छेतरीने ज ए भनभां भक्ताय. आम ४० अवो भाणुस अहिंसक अने सिंह डिस्क गण्याय. नाना भाणुसेने छेतरवामा खडाहुरी माननारा भाणुस द्याणु गण्याय ।

सिंह कर्त रीते शिकार करे ?

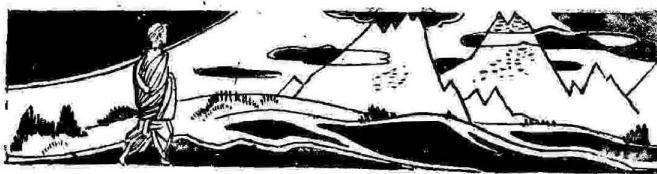
सिंह अणुधारीं डेईना उपर नाटकतो नथी, पहेलो ए गज्जना करे, त्राड नापे, पूँछडु पडाडे, सामाने चेतवणी आपी सावधान करे; त्यारे हंबी भाणुस सामाने छेतरतो होय छे त्यारे ए धराक्ते अम कहे खरो के—‘अमारे त्या असत्य ऐकाय छे, नवे भाल भतावी जूनो भाल अपाय छे, काणां अजर कराय छे; अमारे त्या आवनारे सावधान थई ने आववानी जडर छे?’ अम कहेनारा डाई वेपारी हु दुधी जेवाये छे? वेपारी तो घोतानी दुकाने ग्रामाणिकताना पाठिया राखे, संत-महात्माओना झोटा राखे, नेताओनी छपीओ राखे—आ बहुं शा भाटे? अहिंसाभां जराय न मानतो होय, अहिंसाना एकै चिक्कातने पाणतो न होय जर्ता भादी पहेलीने करे—जो शा भाटे? देखाना दिल पर ग्रामाणिकतानी छाप एसाइवा भातर. ए सामा भाणुसनी साथे वात करतो होय छे त्यारे अना भीभार्थी साकर जर्ती होय अवुँ ए ऐकतो होय छे, ए भादकतानी एवी भूरझी छाटे के सामा भाणुस ए वाणीना धेनभार्थी जगी ज न श्वेत. घोताना धराक्ते समजवतो ए कहे के—‘हु ते जूहुं ऐलु? भारे जूहुं ऐलाने डेट्ला जन काल्वा छे? हु ऐलुं कहेतो होइं तो भाईना गणाना सम.’ अम कही धराक्ता गणे हाथ नापे. परु अने कहां अखर छे के, लाई भरी जय तो अने नहावा-नीयोवानुं ये नथी.

आ रीते भाणुस भनभां कंधक धाट धडतो होय छे, वयने वणी जूहुं जेकतो होय छ अने आपाथी वणी त्रीजुं ज करतो होय छे. आनो हंब करनार भाणुस सौभ्य अने चेतवणी आपी शिकार करनार सिंह करूँ ।

आ दारा अहीं आपी मानवजनतो सिंह साथे सरभाववाभां आवती नथी. जेओ धर्म भूत्या छे तेवाओनी ज आ वात छे. जेओ घोतानो धर्म समजे छे, जेभो घोताना कर्तव्यतुं जान छे ए तो मानव-डेटिमा देवपुरुष छे. परंतु जेओ धर्मते भूती कर्तव्यते याह करता नथी, विवेकने तरे छे ते भाणुस सिंह करता क्षेष्ठ केम गण्याय?

जेवा धर्मभूत्या मानवीज्ञा शहेरी, अहिंसक, औम्य कहेवाता होय तो जले कहेवाय, जेवा विशेषज्ञोनी भहता नथी. भहता तो ए विशेषज्ञोने अनुइप ज्वन ज्वनारनी ज छे.

परिभहनी देवता भाणुसने डेवो नृशंस भनावी मुरे छे तेतुं उदाहरण शोधवा जवुँ पडे अम नथी. रोज-भ-रोज खून, लूठ, अने हुमलाना तेमज जेगसेणा अनावो अनता ज जय छे. परिभहना चैशाचिक कृत्येथी शहुँ सावधान अने एट्लुं ज मात्र कहेवुँ छे.



प्रतीकारनां पगलां अने सहिणता

सौराष्ट्र सरकारने धन्यवाद; मुंबई सरकारने विनंति



मुंबईनी धी जनरल शुक डीपे। तरहथी श्री कांतिकाल नेशन एम. ए. ए संपादित करेल “हमारी राष्ट्रभाषा” पुस्तकना सात लाग प्रगट थया छे। आ पुस्तक मुंबई सरकारे हिन्दी-हिन्दूस्तानीना पाठ्यपुस्तक तरीके भंजूर क्युँ छे; अने सौराष्ट्र सरकारे पछु चेताना राज्यमां अने राष्ट्रभाषाना पाठ्यपुस्तक तरीके स्वीकार्युँ छे।

आ पुस्तकना पांचमा लागमां सातमा पाठ तरीके श्री प्रतापनारायण भिक्षे “हात” उपर लमेल रम्भ उपग्रहे एवो। कटाक्ष लेख आपवामा आउयो। आ लेखमा “हात” थी साहित्यना नव रसनो अनुबन्ध डेवी रीते थर्छ शर्के ऐनुँ वर्णन करता हातथी थता भीभत्स रसना अनुबन्धनो दाखलो। आपता लेखडे नैनोना मुनिमहाराजना हातना प्रत्यक्ष हर्षन करवानुँ नीयेना शब्दोमा (पृ. २७-२८)मां लभ्युँ छे:—

“बीभत्स रसका प्रत्यक्ष दर्शन करना हो तो किसी जैनियोके जैनी महाराज के दांत देख लीजिए, जिनकी छोटीसी स्तुति यह है कि मैलके मारे पैसा लपक जाता है।”

(आनो लावार्थ ए थोँ के नैन मुनियोना हात एटका धधा भेदा होय छे के अना उपर चेसो चोटी जय छे.)

आ लभाषु वाचतां एम ज लागे छे के, लेखक महाशये भीभत्स रसनो आवो देखलयो दाखलो। टांडोने चेताना लेखने ज भीभत्स अनावी दीधी। छे। नैन मुनियो। भाटेनुँ आवुँ लभाषु लेखकनी नैन-मुनियो। प्रत्येनी नरीनिराहरवृत्ति अने देखावानाने ज व्यक्ति करे छे; साथे साथे ए एमनी कूर मझकरी करवामां पछु पाञ्च पञ्चतु नथी। नैन मुनियोनुँ ज्वनडेवुँ तप-त्याग अने संभवपरायण होय छे, ए माटे लभवानुँ आ स्थण नथी।

जे पुस्तकमां आवुँ साम्राज्यिक देख व्यक्त करतुँ अने धार्मिक लागणीने हु मने एवुँ लभाषु होय ते पुस्तक जे पाठ्यपुस्तक तरीके पक्षदं करवामां आवे तो तेथी कुमणी वयना उठरता आणेकाना। हिलमां नैनधर्म अने नैन मुनियो। प्रत्ये तिरस्कारनी लागणी जन्मया वगर न ज रहे। एक सर्वसाधारण पुस्तकमां पछु जे आवुँ लभाषु होय तो। ते ए पुस्तक भाटे कलंक समान लेखाय तो। पञ्ची पाठ्यपुस्तक भाटे तो। कहेवुँ ज शुँ? आवा उल्का लभाषुनागुँ पुस्तक पाठ्यपुस्तक तरीके भंजूर ज शी रीते थर्छ शके? ए ज विचारवा नेवो भुदो छे। पुस्तकमानुँ आवुँ लभाषु ए तो। दूधथी भरेला धडामा विचना दीपी नाभवानी ज गरज सारे।

२२०]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : १८

सौराष्ट्रमां सावरकुंडलाना जैन युवक मंडणे ता. ५-८-५३ना रोज खास ठराव करीने अने राजकोटना 'जयहिंद' पत्रे ता. ६-८-५३ना अंकमां अग्रलेख लभते सौराष्ट्र सरकारनुं आ वात तरह 'धान देहु' ते माटे ते अन्नेने धन्यवाह घटे छे: ए हराव नीचे आपवामां आयो छे.

हे जाणुवा भगे छे ३-सौराष्ट्र सरकारे आ वात उपर तात्कालिक ध्यान आपीने आवा ऐहुहा लभाण्युवाणा आ पाहने २८ करवातुं इरमान इयुं छे. आ वातनो आरटी झडप्थी निकल लाववा भाटे सौराष्ट्र सरकारने अने एना उल्लेखीभाताने अमे धन्यवाह आपीचे छीअे अने अमनो आलार मानीअे छीअे.

हरभ्यान आ पुस्तकना संपादक श्री. कातिलाल जेठोअे 'हमारी राष्ट्रभाषा' पुस्तकमांना दात विशेना पाहमा जैनोनी लागेणी दुखाय अनी हडीकत तरक ध्यान न रहेवा अद्व दिलगीरी दर्शनतो पत्र 'जयहिंद' पत्रमां प्रगट केयो छे ते अमे नीचे आयो छे अने नवी आंदृतिमाथी अ अयोग्य पंक्तिओ २८-धातल क्यातुं अथी जाणुवा भगे छे, आ रीते पोतानी भ्रुव सुधारी लेवा अद्व संपादकने अमे धन्यवाह आपीचे छीअे.

परंतु आ वात आटलेथी पती जती नथी आ पुस्तक आआ सुंभर्त राज्य भाटे पाठ्य-पुस्तक तरीके भंजुर थेल लेवाथी सुंभर्त सरकारे पण आ माटे, सौराष्ट्र सरकारनी जेम तरत धरता पगला लेवानी अने आ पाहने २८ करवानी जहेरात करवानी जळू छे. आशा राखीअे के आ माटे सुंभर्त सरकारने वधु क्लेवा-लभवानी जळू नहीं पडे.

सावरकुंडलानो ठराव

मूऱ्झरोज ता. १०-८-५३ना रोज पूज्य पंत्यासलु महाराज्ञ साहेब केनक-विजयल गर्णिवरना अध्यक्षपणा नीचे भगेली सावरकुंडलाना जैन संघ समस्तनी आ सला- सुंभर्त तेमज सौराष्ट्र विजेर प्रतीनी माध्यमिक शाणाना पांचमा धोरण्युभा चालती हिंदी पुस्तिका "हमारी राष्ट्रभाषा" ना पांचमा लागेमा सातमा "हात" नामना पाहमा नीज प्रेआइमा तेथी क्षत्र लीलीमा जैनोना पूज्य धर्मगुरुमा-जैन सुनिओना हात भाटे ने ऐहुहु-अयोग्य अने सारीये जैन आलमनी लागेणी दुखाय तेवा प्रकारतुं लभाण्यु करवामा आव्यु छे तेने आ सला सभ्य रीत वधोडी काढे छे.

ज्यारे सरकार जिनमजहभी अने जिनसंप्रहायिक सरकार तरीके आणभाती होय अने हरेकने व्यक्तिस्वातंग्य. अने धर्मस्वातंग्यनी अंधारण्य द्वारा आत्री आये छे, त्यारे ते क१ सरकारना डेवण्युभातामां आवा प्रकारना धर्मनी लागेणी दुखाय तेवा लभाण्युवाणा पाठवाणा पुस्तके पाठ्यपुस्तके तरीके चालती होय ते केटलुं अयोग्य छे? आथे आ "हमारी राष्ट्रभाषा" ना संपादक श्री कातिलाल जेणी तेमज आ "हात" नामना पाहना लेखक श्री प्रतीपनारायण गिरि तेमज आ पुस्तकना प्रकाशक धी जनरल आफ डीपे—आ अधाये जैन समाजना पूज्य साधु सुनिमाराने भाटे जे असम्भ उल्लेख केयो छे ते भाटे पोतानी दिलगीरी व्यक्ति करीने साथे अविष्यमा आवुं नहि अने तेवी आत्री आपवी जेहिअे तेम आ सला भाने छे. अने ज्यां सुधी आम न अने त्या सुधी आरतकरना जैन संघोअे जेरेशार्थी पोतानो विरोध व्यक्ति करवो जेहिअे.

આંક : ૧૨]

પ્રતીકારનાં પગલાં અને સંક્ષણતા

[૨૨૧

કેળવણીભાતાએ આવા પુસ્તકો પાઈચપુસ્તક તરીકે મંજૂર કરતો પહેલાં રાખવી જેઈતી તકેદારી રાખી નથી તે માટે અને ફરીવાર આવા લભાણુવાળી પુસ્તકો પાઈચ-પુસ્તકો તરીકે મંજૂર નહીં થય તેવી બાહેદરી સમગ્ર જૈન સમાજને આપવી જોઈજે. આ સિવાયતા ભીજા કે જે પ્રતોત્તમાં આ પુસ્તકો ચાલતી હોય તે તે પ્રતોત્તા કેળવણીભાતાને તથા માનનીય કેળવણી પ્રધાનોને અમો આ પાઈ તાત્કાલિક રહ કરવા વિનાંતિ કરીએ છીએ.

સૌરાષ્ટ્ર સરકારના કેળવણીભાતાએ આ પાડને અભ્યાસક્રમમાંથી કાઢી નાખવાનો પરિપત્ર સૌરાષ્ટ્રની શાળાઓ ઉપર રવાના કર્યો છે તે માટે જૈન સમાજની કાગળીને માન આપવા બદલ અમે તેમનો આભાર માનીએ છીએ; પણ હજુ અમારો વિરોધ ચાલુ જ રહે છે. કારણું હાલ કે જે શાળાઓમાં આ પાઈવાળી પુસ્તકો ચાલતી હોય તેમાંથી તે પાડના માનાએ કાઢી નાખવામાં ન આવે તર્યા સુંધરી આ આખું પુસ્તક જ અભ્યાસક્રમમાંથી રહ કરવું જોઈએ તેમ આ સાથે સૌરાષ્ટ્રના તથા મુંશિ સરકારના માનનીય કેળવણી પ્રધાનોને તથા કેળવણી ભાતાને આગ્રહભરી વિનાંતિ કરે છે.

આપનો વિશ્વાસુ
સાવરસુંડલા જૈન સંઘ
માનદ મંત્રીએ
હાશ્ચી છભીલદાસ રાયચંહ
શેઠ છાટાલાલ મણ્ણિલાલ

જૈન મુનિયોના અયોધ્ય ઉલ્લેખ વિષે સંપાદકની હિલગારી
થયેલી ભૂલ અંગે સ્પષ્ટતા કરતો પત્ર

માન્યવર,

એમાંપતા પત્રના તા. ૬-૮-૫૩ના અથવેખમાં ‘હમારી રાષ્ટ્રભાષા’ નામક ગદપત્ય સંગ્રહમાળાના પાચમા જાગ્રતા ઉમા પાડના એક વાક્ય પરત્વે આપે કરેલી દીકાના રૂપે નહિ, પણ એના સંપાદક તરીકે સ્પષ્ટીકરણું કરી દુર્લંસ્ક બદલ એહ દશ્વાંની ક્ષમા યાચવા આ પત્ર લખું છું.

એ પુસ્તક હિન્દી ભાષાની સાહિત્ય કૃતિઓનો સંચાલ છે. એનો હું સંપાદક છું, એ ખું, પણ ચર્ચાસ્પદ અનેલા વાક્યવાળી કૃતિ મેં લખ્યે નથી. ૫૮ વર્ષ પહેલાં થઈ ગયેલા ને ૪૦ પુસ્તકો રચ્યો એક શિષ્ટ સાહિત્યકારની પ્રતિષ્ઠા પામેલા હિન્દી ભાષાના સુપ્રેસિદ્ધ લેખક સ્વર્ગસ્થ પ્રતાપનારાયણ મિશ્રે લખેલો એ પાઈ છે. પ્રસ્તુત પાઈ વિનોદ પ્રધાન નિષ્ઠા છે ને દેખકે તેમા સ્વર્ગસ્થ અને સારા દીતની ઉપરોગિતા સમજાની છે. આપ એ કૃતિ વાંચી જશો તો આપને ખ્યાલોઝ્યાવશે કે એ નિષ્ઠા ડોર્ચ ધર્મનો ઉપહાસ કરવા સ્વર્ગસ્થ મિશ્રે લખ્યો નથી.

પ્રયાગના દ્વિદિયન પ્રેસ લિમિટેડ પ્રકાશિત કરેલા ને મૈરાવો (ઉ. પ્ર.)ની ફાલેજના પ્રિન્સિપાલ શ્રી. શિવશાંકર વર્મા એમ. એ. એ. હાઈસ્ક્વુલની - બી'ચી ક્લાસ માટે તૈયાર કરેલા ‘આદર્શ ગદ્યસંચલુ’ નામના પાઈચપુસ્તકમાં એ કૃતિ પસંગે પામેલી

二二二

શ્રી. કેન અત્ય પ્રકાશ

[୪୯୮ :୧୯]

સૌનાથી મેં હમારી રાખ્યું ભાખાના પાંચમા સંગ્રહમા અને સ્થાન આપ્યું. એ પુરસ્તકની એક
નકલ અદિગ રજુસ્ટર્ડ કુલપોર્ટર્થી મોકલી છે. તેના પેજ નંબર ૧૪ ઉપર હાતનો પ્રતાપ-
નારાયણ મિશ્રને લખેલો પાડ છે. એ કૃતિમાં કૈનથર્મના ભાઈ જોની લાગણી દુલ્હને તેણું
એક વાક્ય આવે છે, એ જે મારા લક્ષ્યમાં આવ્યું હોત તો તે વાક્ય મેં એમાં આવવા
દીધું જ ન હોત, અરણ કે અધા ધર્મો પ્રત્યે મને માન ને પ્રેર છે અને ધર્મ વિષયમાં
કોઈની પણ લાગણી જરા પણ દુલ્હાય એ યોગ્ય નથી એમ હું માનું છું. જૈન સુનિ મહા-
રાજે માટે મને પૂર્ણ માન છે. શ્રી. મિશ્રના એ નિખંધમાં જૈન ભાઈઓની લાગણી દુલ્હાય
એવું એક વાક્ય છે એ વાત ગયા જુદાઈ માસમાં પુરસ્તકનું પુનર્સુદ્ધણું કરાવતી વેળા મુદ્રા
નેતીના મારા લક્ષ્યમાં આવ્યું ત્વારે મને એવ થયો અને એ વખતે મેં એ વાક્ય એ પાઠમાથી
તરત જ કાઢી નાખ્યું. એ સુધારેલા પાડવાળો ફર્મે આ સાથે આપને મોકલું છું. એ
જુદાઈના છેલ્લા અઠવાદિયામાં છપાયો છે આ ઉપરથી આપ જોઈ શકોશી કે મેં જાતે જ
ખ્યાલ આવતાં એ વાક્ય કાઢી નાખી સુધારો કરી લાયો છે. મેં સંપાદિક કરેલા સંગ્રહ-
માની એક કૃતિમાં જૈન ભાઈઓની લાગણી દુલ્હાય એવું એક વાક્ય અગ્નાણુતા રહી ગયું
એ માટે મને ધણો જ એવ થાપ છે ને એ દુર્લક્ષના દોષ માટે જૈન સમજની ક્ષમા માણું
છું. એ વાક્ય સામે વિરોધ જોણો થયો એ પહેલાં જ એ વાક્ય કાઢી નાખી પાઠ સુધારી
લીયો છે એ હકીકત આપને તથા જૈન જનતાને મારી સહભાગતાનીને જૈનધર્મ તરફની
મારી સંભાનશીલતાની પ્રતીતિ કરાવશે, એવા આશા રાખું છું ને આગદી આવૃત્તિમાં મારા
દુર્લક્ષના કારણે એ વાક્ય રહી ગયું એ બહલ બંદી વિલગીરી દર્શાવી ક્ષમા માણું છું.

મુખ્ય. ૨૧-૮-૫૩

લિ. કાન્તિલાલ જોશીના સવિનય પ્રખ્યામ.

[अनुसंधान पृष्ठ : २२४वीं चाल]

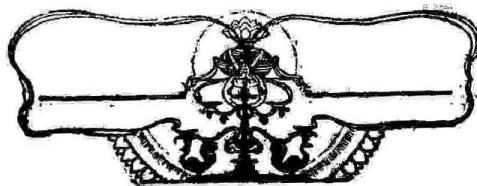
આ ભગીરથ કાર્યને તન, મન અને ધનથી વેળાસર સમર્પિત થઈ જવું હિતાવહ ગણ્યાદ.
કારણ કે તેમાં હાજરો નિર્દેખ અશરણ અને મુંગાં પ્રાણીઓને જીવિતદાન આપવાની સાથે
આપણ્યા નારિતક વિચાર ધરાવતા અંદુષોને જણુ શેર પાપથી ડિગારી લર્ધ સહગતિના
બાબતન અનાવવાનું ભગીરથ પુષ્ટ ક્રમાયેલું છે, શાલ્યામર મહારાજ કરમાવે છે કે—

यो रक्षति परजीवान्, रक्षति परमार्थतः स आत्मानम् ॥

यो इन्ति अन्यान् जीवान् , स इन्ति स्वकीयथात्मानम् ॥

અથ્વ:—“ જેઓ અન્ય જીવાનું રક્ષણ કરે છે, તેઓ પરમાર્થથી પોતાનું જ રક્ષણ કરે છે, જેઓ અન્ય જીવાને હશે છે તેમા પરમાર્થથી પોતે પોતાને હશે છે.”

પ્રાણીમાત્ર સમાન હોવાથી જે માનવ પશુ-પંખી પ્રત્યે નિર્દ્યક રહે છે તે માનવ આનંદ પ્રત્યે પણ ચોતાને ડેડી ઉપાયેથે દ્વારા લેખાની શકતો નથી.



જીવો અને જીવવા હો

[સાંવત્તસરિક અમારીપડહ]

લેખક : પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી. હંસસાગરજી [વલ્લબીપુર, સૌરાષ્ટ્ર]

**જીવો હુનિ કરે એઠેસે જીવલેણ થયું એ લીપણ નિર્દ્યતા છે.
સહૃ પ્રાણીને સુધે જીવવા હું ને જીવવામાં માનવતા છે.**

જીવને વધુમાં નહું 'સ્પર્શદ્વિય, સરોન્દ્રિય, પ્રાણેન્દ્રિય, ઓચેન્દ્રિય, મનભળ,
વચનભળ, કાયભળ, શાસોશ્વાસ અને આયુધ' એ હશ પ્રાણું હોય છે. મૃથી, પાણી, અગ્નિ,
વાયુ અને વનસ્પતિના જીવો એકે દ્વિય છે. જાંખ, ડેડા, અળશિયા, પૂરા વગેરે જીવો એકે દ્વિય
છે. ઉદ્દેશી, જૂ, લી અ, માંકડ, ચાંચડ, મંકડા, કીડી અને કુંઘુઆ વગેરે જીવો તેદ્વિય છે. કાન-
ઘણૂરા, ગીંગોડા, વીંછી, ધીમેલ, ધનેરા, માખી, મચ્છર, ડાસ, પતંગિયા, કંસારી વગેરે જીવો
અહિરિન્દ્ય છે. અને પોપઠ, સડા, કાયડા, કંદળા, ચકડાં, કુદડાં, ચામાચીદ્યા, તેતર, કાખર,
હેલાં, મેર, વાગોળ (વળવાગી), બગલા, સારસ, અતઢ, હંસ, મેના, ડાયલ વગેરે પદ્ધિઓ
તથા ગાથ, કેંસ, અણા, જીટ, હાથી, ધોડા, ગધિંદા, હરણ, રોજ, વાહરા, સિંહ, વાધ, દીપડા,
સાલક, ચીતરા, કુતરા, પિલાડા, ભૂંડ (ફુફુર), સસલાં, શિથાળ, સર્ફ, ધીં, મળિયો, શાશ,
ઉંહર વગેરે પશુઓ પચેદ્વિય છે. આ ઉપરાત હેવો, મતુષ્યો અને નારદો પણ પચેદ્વિય છે.

મતુષ્યો અને હેવો સિવાયના ઉપરના સર્વપ્રાણીઓ તરતમતાએ પુષ્યહીન હોઈને
નિરાધાર અને અશરણુપ્રાય: છે. હેવો અને મતુષ્યો જો તેને સુધે જીવવા હેવાની દ્યા-શુદ્ધિ-
વાળા હોય તો જ તેઓ સુધે જીવી શકે તેમ છે. મતુષ્યો અને હેવો જો નિર્દ્ય હોય તો તે જે
પિઅારા નિરપરાધી પ્રાણીઓનું જીવનસુખ, તેઓના કરપીણ હાથે અકાળે જ હુણાઈ જવા પડેશે.

ઉપર જણાવેલ ૧૦ પ્રાણુભાથી એકેન્દ્રિયને ૪, બેઈ દ્વિયને ૬, તેદ્વિયને ૭, અહિરિન્દ્યને
૮ અને પચેદ્વિયને ૧૦ પ્રાણું હોય છે. પશુ, પંખી, માનવ વગેરેને ૧૦ પ્રાણું હોય છે. આર
પ્રાણું પણનો એકેક પ્રાણું આત્માને થયું જ પુષ્ય ઉપાજન થયા પણી મળી શકે છે. છુલા,
જાંખ, કાન, નાક વગેરે એકેક પ્રાણું એદલા કિમતી છે કે આખી દુનિયા આખી હેતાં તેમાનો
એક પ્રાણું પણ મળી શકતો નથી. આવા કિમતી ૧૦ પ્રાણું પશુ-પક્ષીઓ ધરાવે છે. પશુ
હે પક્ષીને મારી નાખનાર હિંસક આત્મા, તે પશુ કે પક્ષીની કેટલી મહાન મૂડીનો વૂગરુ
છે તે વિચારવાનું આ સ્પર્ધિકરણથી સુલભ અને છે. પોતાને પ્રાપ્ત ધ્યેલ સખાતાના ગેને
ક્રમા આવી કર્યા ને તેવા નિરપરાધી અને નિરાધાર પશુ-પક્ષીઓનો વધ કરનાર એને
કશાવનાર માનવ, કેટલું લયંકર ખાપ ખાવે છે, તેનું આ આખું હિંગુર્ણન છે.

માનવતાહીન માનવ જ તેવો નિર્દ્ય અની શકે છે. દુનિયામાં નૈતિક નિયમ છે કે,

२२४]

श्री. लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : १८]

पोताना ज्ञवनो जे आधार होय तेने जे हणु ते नर अधम गण्याय. उपर जणुवेला अडिन्दियथी लक्ष पंचेदिय पशु अने पक्षीओ मानवने आधारभूत छे. तेहो फरेक्ने मानवनी के तेना हाइ-याम आहि डोळनी जडर नथी; ज्यारे मानवने पृथ्वी, पाणी, अजिन, वायु, वनस्पति आहिनी जेभ आस जडर छे, तेभ हृषि, हाइ, याम, हांत, शीग, नम, पीछा विगेरेनी हाजतो पूरी पाडनारा पशुओ अने पंजीयेनी पशु आस जडर छे. अनी हयाति विना खडु हाजतोथी ज्ञवो मानव क्षयुखर खणु ज्ञवो सुखेलमायः छे. मानव तेमनो आवो ओशियाल छे. आर्थी अडिन्दियथी मांडी पंचेदिय गण्याता पशु-पक्षी सुखीना प्राणीओनो आधार मानव नथी; परंतु मानवनो आधार तेहो छे. आवा ए पोताना आधारभूत प्राणीओने जे मानव ज हणु तो ते मानव, निर्विचारी, निर्दय अने अधम गण्याय ए सहेजे समझ शकाय तेभ छे.

आम छता एवा य मानवो जेवाय छे के, जेहो पोताना ते आधारने वातवातमा हणु छे अने तेभ करवार्मा पाणी गौरव धरावे छे। एवा कूर मानवनो अशरणुपशु भोग भननारा दे पशु-पक्षीओ, जे मानव करतो सभल होय तो मानव तेमनाथी चाहे तेटवी तुक्षानी थती होवा छता पशु भर्मी आतो ज होत. तेहोने हुख्यवानो विचार स्वप्नेय करत निहि; धर्म अविद्यान भागतो निहि होवा छता मांसनी दोहुपताथी पशुना कूर अविद्यानमा धर्म मनवानारा पाऊंडी जनोये पशु सिंह अने वाध आहिनां अविद्यानो तो विचार सरण्या य क्यां क्यों छे?

आर्थी ज आर्यवर्तमां उत्पन्न थेला फ्रेक ह्याणु हर्षनकार ऋषि-मुनिओने मानवना आधारभूत ते प्राणीओनी [तेनी नशणाईनो लाल लक्षने जे ते अहाने] क्षतव करी नाखवातुं अपकृत्य करनार मानवने शिकारी, पारधी, पापात्मा आहि शब्दोथी ओणाखावेल छे.

महाभृत्यवान गण्याता मनुष्यवत्तमा पामेला मानवेमा पशु सोतुं अने पितणी जेभ आसितक अने नासितक एम ऐ वर्ग सदाना छे. सर्वलुववत्सल ऋषि-मुनिओनां वयनोने अतुसरेनार वर्ग आसितक अने ऐ आप्त महर्षियोना वयनोथी विपरीत वर्तनार वर्ग नासितक इहेवाय छे. आसितक्तुं लुवनधेय, ‘हुनियाना तेवा अभ्यारा अशरणु प्राणीओने आयुष्यना अंतपर्यंत सुधे ज्ञववा हडि, ज्ञवडुं अने हुं ज्ञवु’ ऐ होय छे; ज्यारे नासितक्तुं लुवनधेय, ‘हुनियाना तेवा निरधार प्राणीओना पशु ज्ञवना बोगे- हुं ज्ञवु’ ऐ होय छे. ‘हुं तेहोने प्राणु आपी शक्तो नथी, तेहोना प्राणु भारी भालकीना नथी अने तेमना किमती प्राणेने क्या हड ज्ञवाथी हणुं शडुं?’ ऐ विचार नासितकने स्वयं आवो सुश्लेष छे.

आर्थी आपण्या आ आर्यवर्तमां ह्याणु अने डिंसाप्पेर विचारेतुं दूँद याला करे छे, अने ते हुमुल दूँदने अद्यापि पर्यंतनो आसितक्वर्ग, ऋषिमुनि क्षित आप्तवयनोना आधार (नासितक वर्गने हडो. अनावी हडने) समावी हेवाभा सङ्ग जे छे. एवा आपण्या आ ह्याप्रधान आर्यवर्तमां पशु काळोषे आने नासितक विचारेने निरंकुश नाचता पशु जेई रहेवुं पडे, ऐ आसितक वर्गनी नशणाईनी पराकाष्टा छे. आने आ आर्यवर्तमां नासितक वर्ग, आसितक वर्गने पशु सङ्कापित्वैक नासितक अनावी हेवाभा पावरघी जेवाय छे. एथी वधु हुःअ क्युं हेई शके?

અંક : ૧૨]

જીવો અને જીવા હો

[૨૨૫]

જક્ષિ-મુનિઓએ જેને ખર્મ તરીકે ગોળખ, વેલ છે, તે ' અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, અદ્વાચર્ય અને નિષ્પરિશ્ચાલ'ને નાસ્તિક વર્ગેં ખર્મ તરીકે કણ્ઠ કર્યા વિના ચાલે તેમ નહિ હોવાથી આજે એ જ અહિંસાદિ ધર્મનો અંચો ઓઢીને નાસ્તિક વર્ગ હિંસા, જૂઠ, કાળાભનાર, અખલ અને પરિગ્રહના ઝુંગા એકડા કરવાપૂર્વક આસ્તિક વર્ગને છેતરી રહેલ છે. માનવીનું પેટ ભરવાને બહાને અશરણ, મૂંગા અને નિરાધાર પશુ-પખીઓના આંકો મોત નીપણવીને માનવીને તે નિર્દેશ પ્રાણીઓના માસના લેાચા આરોગતો કરી માનવને દાનવ બનાવવાના વોર નાટકો બજની રહેલ છે। એ રીતે અહિંસાના અંચળા તળે 'જગતના અધા પ્રાણીઓમાં માનવ જ કિંમતી છે અને તેથી બીજા અધા પ્રાણીઓના મોજે પણ માનવ જીવો નેછ શે' એવી માન્યતા અને પ્રવર્તન રખાય, તે અનાર્ય જનોતું હિંસક અતુક્રણ જ ગણ્યાય. જે જીવોને જીવનું છે, તેને જે તે અહાને મારી નખાય તેને અહિંસા તો મૂર્ખ જ માની શકે. પોતાને ડેંડિ 'મર' કહે તેટલામાં જે ઝુંગ-ઝુંગ થઈ જય છે, તે માણુસ બીજા જીવોને જાનથી મારી નાખતા લોક્યથી પણ કેમ લાજતો નહિ હોય?

' એતીવાડી અને બાગમગીઓને હાનિ કરે છે, માટે તેઓને મારવા જરૂરી છે' એવી દ્વારા પણ નિર્હૃતાસ્યક છે. નૈતિક એવો એકાદ પણ દાખલેના નહિ મળે કે, એ પાચ ઇપિયાતું તુકસાન કરનારને દેહાત હડું કરાય. જ્યારે પેટ ખાતર તો બસો-પાંચોસો ઇપિયાતું તુકસાન પહોંચાડાનારને થ રહેમદલીપૂર્વક જતા કર્યા હોવાના દાખલાઓ સેંકડો મળો શકે તેમ છે. મોલાતની શરીરાતથી જ તેમા ઉપજલી વિવિધ જલતિની અસંખ્ય જીવાતો-ઈંગ્લો, કાતરા, ગેરૂ, આગિયા વગેરેથી અને તૈયાર થયેલા પાકર્મા થતા અસંખ્ય ઝુંઘું-ધનેરિયા વગેરેથી એતીવાડી અને બાગમગીઓને સરને માટે અખણે ઇપિયાની અનિવાર્ય હાનિ ચાલુ જ હોવા છત્તાં અદ્યાપિ પથ્યાત પશુની જેમ માનવી અનાજ અને ઇણઇલાદ્વિ વગર જુખે મરેલ નથી; જ્યારે જ્યારું ત્યારું રખડી-રવડીને અને કુટાઈ-પોટાઈ ને પણ અનુધા ધાસથી અને અદ્યન આહિથીય કષે જ પેટનો અડધો-પદ્ધો આડો પૂરવા પામતા પશુ-પખીઓ તો બિચારા તે ધાસ આહિનાય અલાવે આજે ટગલાઅધ્ય પ્રમાણુમાં જુખે મરી રહેલ છે। આ દુઃખ થીના આંખ સામે હોવા છત્તાં પાંચ-પચીશની હાનિખાતર તેને પોતાના જ આવારભૂત પ્રાણીઓની કંતલ ચલાવવા પ્રેરાવું તે ધોર હિંસાભેર હંદ્યતું માતીક ગણ્યાય. અદ્ય તુકસાન કરે, તેને જે કંતલની સજનોના ન્યાય ગણ્યી કાઠલામાં આવે તો એ રીતે અન્ય પ્રાણીઓના અમૃદ્ય પ્રાણોને જ હુણી લેવા જેવું મહાન તુકસાન કરે તેમને કષ્ટ અને ડેંડી વોર સજા ન્યાય ગણ્યો?

સર્વ પ્રાણી પેટ અને તે કારાય તેટલું પુસ્ય, સાથે જ લઈને જન્મેલ હોવા છત્તા દૂર માનવીઓ પોતાના આડો પૂરવાના દુટીલ બહાના તળે તેવા નિરાધાર અને મુક પાણીઓના ડિડા ભાડાવાળાં જુખ્યા પેટ જીવતો જ ઝડી નાખવાનાં ધોર પાપો ઉપાન્દે, એ થીના હરકોઈ આર્યને કમકામાઈ ઉપજે તેવી કરુણ ગણ્યા. તેવા જનોને તેવી હિંસક પ્રવત્તિથી અટકાવવાના શ્રી મુંબઈ જીવદ્યા અંદુણીએ લિધેલા સર્વ જીવો મંત્રિની પ્રેમાણ લાગણીઅર્ય સંવત્સરીની શાસ્ત્રીય અમારીનાં પગલાં હરકોઈ દ્યાવંત માનવીને વારવાર અતુમોદ્દિની ગણ્ય આત્મકલ્યાણને ધ્રુંજનાર ધર્મિષ આત્માઓએ જીવદ્યા મંડળીના

[જુઓ અતુસંધાન પૃષ્ઠ ૨૨૨]

અજ્ઞાનનો અંગમ

ક્રેચક : પૂજય સુનિશ્ચાજ શ્રી. મહાપ્રસાદ વિજયલ (આ. શ્રી. વિજયરામચંદ્રભૂતિભરલ શિષ્ય)

નિર્ધિન દ્વારામાં હુંખથી કંઈણી, સ્ત્રી અને પુત્રને નિરાધાર મૂડી, પરદેશમાં શેડે વેપાર માટે પ્રયાણ કર્યું. પુત્રના પુષ્ટયથી ઘરમાંથી ધન નીકળતાં મહેલ બધાંયો, ડવાંગના જેવી આઈ કન્યાએ પરણી, પરદેશ જઈ કરેડાની હાલત મેળવી એક વર્ષમાં પાછો વળતાં, તેના દર્શાન માટે અને પરણાવવાની ડોડ સેવતા, પરદેશથી પાછો ફરેલા પિતા આનંદ માનવાની જગાએ પોતાના સુખ ખાતેર અજ્ઞાનથી તેને ભરાવી નાખે છે. પિતા જિંદગી હારી જાય છે.

અજ્ઞાનથી સાચા દુઃખનો એળાભાતા નથી અને શવુંઓમાં પણ મિત્રનો આભાસ થઈ જથું છે. અરું જેતાં આત્માના એકત્રે અહિતકારી એવા દુન્યવી પદ્ધતી આપણુંને સુખની સાધનિક્ય હેઠાથ છે પણ આપણા ગળામાં જરૂર-મરણ-શૈગ-શોક આહિનો કારમો ફિસો ધાલતા એ દુષ્ટો આપણુંથી એળાખી શકતાં નથી. અતાને જગતમાં હુંખના ફાવાનો સળાવેલા છે. રૂપી કે સધળાએ દુઃખનું કારણ અતાન છે. જાનના પ્રતાપે અસાન હો છે, મિથ્યાત્વ મરે છે, શરૂ અને મિત્રનું ભાન થાય છે, દુરાચાર દૂર થાય છે, સદાચાર જીવનમાં પ્રગટે છે. હુંખ સદગું લાગે છે અને સુખ રવ્યું આવી મળે છે.

ધન-ધાન્યથી ભરપુર એક નગરમાં એક ધનિલીન શેડ અને શેડાણી રહેતી હતી. પૂર્વના પાપોદ્યના કારણે તેમની પાસે નથી કોઈ સંપત્તિ, જરૂર-જરૂરીન, એથ કે આખરું. સર્ગા કે વહાલાં માત્ર પોતે એ પતિ-પત્ની. આટલું બધું હુંખ છતી લલી એવી પતિને ભરાયે કષ્ટ ઉપયવતી નથી, આમ દિવસો વ્યતીત થાય છે. શેઠને ક્રીસ વર્ષની ઉંમરે એક પુત્ર થયો. શેઠને ગરીબાઈનું હુંખ ધથ્યું સાલતું. લોકેના મેણ્ણા-ટોણા, અપમાન અને ધિક્કાર દેખ્ખી-સ્વભાળી શેઠના પ્રાણું કરે આવી ગયા. તેમણે શેડાણીને કહ્યું : “તું કુળવાન છે. પુત્રનું રૂઢી રાતે જતન કરજે, તેને વિશેષ કહેવાની જરૂર નથી. વ્યવહારમાં મારા કરતાં તું વિશેષ જાણે છે. હવે આ નગરમાં હું રહેવા માગતો નથી, પરદેશ જઈ જત-મહેનતથી સંપત્તિ મેળવવા પ્રયત્ન કરીશ, સહિતના મળે અને ઉજ્જે મૌઝે ફરી શકાય તેવી સ્થિતિ થશે તો હું પાછો આવીશ. નહિં તો આ આપણું છેલ્લું મિત્રન માનજો.”

શેઠની ધ્યાનથી સુશ્રી, દીન વચન અને થરથરતી કાયા દેખી શેડાણીની આખેમાં શ્રાવણ-બાદરનો વહેના લાગ્યો; છતાં હંદયને દ્વારાને શેડાણીએ પતિને વિનય્યું : “નાથ ! પરદેશ જવાની જરૂર નથી. આ શહેરના સંજનનો કંઈ તમને સંતાપતા નથી. અને હુંખનો સત્તાપે તેમાં તો નવાઈ જ નથી. માટે શાતી રાખી કુલસજન કરો. પૂર્વના પાપોદ્યે હુંખ આખ્યું છે તો તેને પણ હસતે મૌઝે સહન કરવામાં આપણી મહત્ત્વ માટે કાયરતાથી હુંખ જરૂર નથી. પરદેશ જવા માત્રથી કથ્યાણું થઈ જથું એ માનવાયોય નથી. અહીં સંતોષ રાખી રહીએ તો શું હુંખ છે ? આવા રોકલો, રહેવા કુંપડી અને શરીર ઢાકવા નંદી કપડી તો મળે છે.” આમ શેડાણીએ સભનથ્યા છતી શેડ કંઈ ન માનતો પરદેશ જવાનો અફર નિશ્ચય અતાંયો. દોરી, લોણો, બિસ્તરો અને થાડું ભાતું લઈ શેડ વિદ્યાય થયા.

ધેર નાનો આગક અને તેની ભાતા નિરાધાર સ્થિતિમાં રહ્યા, શેડ થોડે હૂર ગયા હશે તેવામાં જ શેડાણી પોતાના છોકરાને રમાડતી હતી. તે છોકરો પાસેના ખૂલ્ખામાં જઈ એડો

અંક : ૧૨]

અજ્ઞાતનો અંગત

[રેસ્ટ્રેટ્ડ]

અને માને ત્યાં પોદવાનો આગ્રહ કરવા લાગ્યો. માણે બાળહુદને આધીન થઈ ખાડો કરતા માંડયો. વેતેક ઘોહતાં તેમથાં સોનામહેરનો જરેલો ચરુ નીકલ્યો. પુષ્યશાળી આત્માઓનું પુષ્ય કંઈ રીતે અને કથા કાળે ઉદ્ઘર્માં આવે છે તેની ગતિ અફળ છે, શેડાણીએ પતિતે પાણ બોલાવવા અનેક માણુસે દોડાવ્યો પણ કંઈ પત્તો લાગ્યો નહિ. આ ચરુના ખંનથી શેડાણીએ સુંદર બંગલો અંધાવ્યો. ગાડી, ઘોડા આહિ અનેક સુખના સાધનો પોતાના પુત્રને માટે વસાયાં. પોતે પતિત્રના હોઈ પર્તિતું સ્મરણુ કરતી, શરીરને પોષવા માટે જ લુણો, સુકો આણાર કરતી અને પતિના જલાની જપ્તમણા કર્યા કરતી. પાણીના પ્રવાહે વર્ષો વહી ગયાં. પુષ્યશાળી આગ્રહ સારી રીતે ભણ્યો, નગરમાં આખ્રુ જમાવી, દોડો તેમજ રાજનો પણ માનીતો અન્યો.

વીસ વર્ષની ઉંમર થતી પુત્રે કરીયાણું ભરી પરહેશમાં વેપાર જેડવા વિચાર કર્યો. તેં વખતે માતાએ કહ્યું: “વત્સ ! પરહેશ તુ જલે જ, તેમાં મારી ના નથી. પણ મારી એક વાત માની પરહેશ જવાનું હમણું એક માસ માટે સુલતની રાખ, તું ઉંમરલાયક છે અને સેકડો શ્રીમતો પોતાની દીકરીએ માટે તારું માણું કરે છે, તેનો મારે શું જવાબ આપવો ? માટે યોગ્ય કન્યાએ સાથે લગ્ન કરી મારા મનેરથ પૂરીને પછી પરહેશ જ. મારા આશીર્વાહ છે તે તારું કલ્યાણું થશે. પરહેશ ગરેલા તારા પિતાજુનો કંઈ પત્તો નથી, તેમને શોધવા માટે પણ તેને પરહેશ જવા મારી પ્રેરણું છે.”

પુત્ર વિનિત હતો. એટલે હાથ જેઠી નન્દપર્ણ કહેવા લાગ્યો કે, “મા ! તારી છુંછાથી વિરુદ્ધ મારે કંઈ જ કરું નથી. તારી આજા પ્રમાણ છે.” આ સાભળી માને ડેટલો આનંદ થયો. હશે, તેતું વર્ષનું શક્ય નથી છત્તી પૂર્વની અવસ્થા અને વર્ત્માન અવસ્થામાં શેડાણીનું હૈયું એક જ સરખું નિરબિમાની હતું. પછી તો એ પુત્રે હેવાજના જેવી આઈ કન્યાએનું મોટા સમારોહપૂર્વક પાણુ-ગ્રહણ કર્યું અને કરોડોનો હાથને મેળવ્યો. ઘોડા સમય પછી પુત્રે આઈ સ્વીએ સાથે પરહેશ જવાનો વિચાર રજૂ કર્યો. લારે એ શાંત અને શાણી પત્તીએએ પતિના તીર્થસ્વરંપ પૂજય માતાની સેવા કરવા રહેવાની છંચણ પતિને દર્શાવી. અન્તેના વિવેકથી પતિને આનંદ થયો. બાકોની છ સ્વીએ. અને સેકડો શેડ-શાહુકારના પુત્રો અને નોકર-ચાકરોના મોટા કાંકલા સાથે પુત્રે દેશાટન માટે પ્રયાણ કર્યું. પુષ્યશાળી જ્યા જથું ત્યાં મોટા મહોસુસો થાય છે, માન-સન્માન મળે છે અને સંપત્તિએ તેને શાખાતી આવે છે.

બાર માસ સુધી ધૂમી પુત્ર કરોડેણી પેદાશ કરી પોતાના નગર તરફ પણ વળો રહ્યો છે. રત્ન-મણિ-માણેફનાં જાડોએ જરેલી છે. સુખનાં સધળાં સાધ્યો જાય છે. ગીતગાન-નાટારંભ આહિમા આખે હિવસ પસાર થાય છે. એ ચાર હિવસમાં પોતાનું નગર આવી પહેંચે એવા સ્થળે પુત્ર આવી ગયો છે. મા, બજે સ્વીએ અને નગરના ન્યાયી રાજુને અને નગરના દોડોને મળી, જેઠી પરહેશના અવનવા કહેવાનો ઉમંગ કુમારને આતો નથી.

બીજ તરફ લાખા કાળથી પરહેશ રહી શેડ પોતાના વતન તરફ આવતા હતા આવ્યો. હિવસ પગે ચાલતા અને અત્યંત પરશ્રમ કરતા શેડ ચારેક નોકરો સાથે રાખે એક સ્થળે નિરાત ભંધ લઈ સવારે પાણ પ્રયાણ શરૂ કરી હેતા. કુમારે એ સ્થળે પ્રધાવ નામ્યો હતો એ સ્થળે આવી તેણો સુતા. પણ આ સ્થાનમાં તો ગીત-ગાન-નાટારંભ આહિથી રાતના ભાર વાગ્યા સુધી ગર્ઝના થયા કરતી હતી. તેથી તેમને કંટાળો આવ્યો. બીજું માઈ યોગ્ય સ્થળ હતું નહિ એટલે પોતાના માણુસ મોકલી ગાયન-નાટક અંધ કરાવવા તેમજે મ્રદુલ

४२८]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

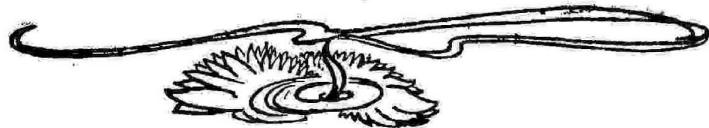
[वर्ष : १८

क्यों पछु सहेता शी रीते भजे ? ज्यां शेठल (पुत्रना) ना हरवालमा पेसवातुं ज मुझेल छोय त्यां आवा सहेश संलग्नाववानी तो वात ज क्याथी ? आ काइलाना भालिक उपर नवा आवनार शेठने कारमे रोप अद्यो. बीजे हिसे अन्ने शेठ भयाणु क्यु? धनाढ्य शेठने काइले साधना द्वारा प्रोप्र स्थगे पहेंची ज्ञता अने जग्या रोड़ी लार्ड रावडीओ. अड़की नाभतो. जउधाना अलावे साधन वगर पाछण आवनार शेठने पछु त्यां ज उतरवातुं अने जभनातुं थहु.

उतरवाना स्थाननी अगवडथी अने आ स्थान गाझतुं रहेवाथी, रातना बार वाघा सुधी बांध न आववाथी शेठने विवेक दीपक खुआई गयो. पेताना विश्वासु नोकर द्वारा उपकारी धनाढ्य शेठल्हो ग्राणु लेवानो तेमणे प्रथत्न क्यों. नोकर पूरो छणकपटी हुतो. रातिना एक वागे अधुं ये शांत थर्च ज्ञता ते क्लार्ड युक्तिथी ऐ पुण्यशाणा शेठनी रावडीओ पहेंच्यो. अने ऐनी रीते सजगावी डे पेते पकडार्छ न जय अने आ शेठल अची पछु न जय. के रावडी बाणवामा आवी तेभा शेठल अने एक स्त्री सुतेकी हुतो. भीजु रावडीमा भीजु खीओ अने धोवणु आलडो सुती हुतो. शेठ-शेहाणुने व्याववानो प्रथत्न धोणु थयो. पछु निष्टुग गयो. कुमारतुं आ रीते क्युसु भृत्यु थता काइलाना भधा भाषुसो छातीझट रुहन डरवा लाग्या. ते व अते पाछणथी आवनार शेठल अने तेना बार नोकरो आनंदमा बुखतान अनी गया. तेमने हाड़क वणा डे, हने निरते बांध आवयो.

मेरो काइलो आगवा पगे एक ऐ हिसे पेताना नगरमा पहेंच्यो. पाछणथी आवनार शेठल लापेक इपिया कमाईने आव्या हुता एट्टले धरती भर तेमना पग हरता नहोता. आनंद अने अलिभानमा तेओ विचारे छे डे, “वेर ज्वर्शु”, खीनी आगल आवडतनी अने कमाण्डुनी वातो क्लीशु”. छोकरो पछु नीस-आवीस वर्षनो थयो हुरे, अने परण्यानीशु. पछी लेडो तिरस्कार करी शक्शो नहि. आवा विचार करता शेठ पेताना बार भाषुसो साथे नगरमा आवी पहेंच्या. कुमारना क्युसु भृत्युना समाचारथी आभा नगरमा शेकनी काणा छाया पथराई गर्छ हुती. तेवामा पेला शेठल ग्राममा आवतोवेंत ज्ञवी पेताना वेर जय छे त्या पहेवानी जुंपडी नथी पछु हाथी, धोडा साथे भेरो महेव छे. त्या नवधुवान खीओ कारमे विवाप करी रही हुती. भाथाना वाण लेवडाववानी किया यालु हुती. शेठ पेताना धरती पूछपरछ करी. लेडो शेठने ओणग्या. अधी धीना कही. छोकरो ऐ हिस पूर्वे ज रावडीमा बणा गयो. ए समाचार जाणु शेठ गुर्जित थर्च ढोणी पड्या. हाथना क्यां हुए वाग्या. भूर्णा उतरतां शेहाणु यासे गया. शेहाणुओ भारे क्लपांत साथे क्यु? “ऐ हिस पहेला ज मुत्रतुं क्लू हैने क्युसु भृत्यु नीपन्जनी आपणी उपर कागो डेर वतीयो छे. तमे पुण्यशाणा पुत्रतुं भूष डे तेनी क्लपांत ज्ञेष्ठ न शक्या अनुं भने हुँध थाय छे.”

शेहाणुना आ शब्दो साक्षता शेठ छाती कूटता कडेवा लाग्या: “हैवने हौप हैवा ज्वेन नथी. हौप तो कम्यंडाल एवा भारो ज छे.” शेठ पुनेनी रावडीने जे आग लगावी हुती ए अधी वात शेहाणुने धोडा विस्तारथी कही. शेहाणु आ साक्षणी संसारथी विरक्त अनी गयां. संसार भरेभर कारमे अने अकारो लाग्या. अकस्मात करी धा थवाथी कंध चेन न पडता संतान वगरनी शेहाणुओ पेतानी पुत्रवधूओ साथे साध्नी अनी आत्मकल्याणु क्षाण्यु. शेठल तो ज्ञव्या त्यां सुधी रोज ए असान प्रसंग याद करी रोपा. असानना अंधकारमांशुं शु अने छ अने तेनो डेवो क्युसु अंजलि आवे छे ते आ वातथी समज्य छे.



उपाध्याय विवेकसमुद्र विरचित नरवर्मचरित्र

लेखक : श्रीयुत भंवरलालजी नाहटा

विक्रमी आठवीं शतीसे संस्कृत भाषामें आगमोंकी टीका लिखनेका कार्य श्रीहरिभद्र-सूरजीसे प्रारंभ हुआ पर चरित्रकाव्य दसवीं शतीके प्रारंभ तक प्राकृत भाषामें ही लिखे जाते रहे। दसवीं शतीके महान् ज्योतिर्धर विद्वान् सिद्धर्थि ने 'उपमितिभवप्रपंचाकथा' नामक विश्वसाहित्यमें अजोड़ ग्रंथरत्न रच कर संस्कृतमें रूपक चरित्रकाव्य रचनेका प्रारंभ किया। फिर भी बारहवीं शती तकके अधिकांश चरित्रप्रथ प्राकृतमें रचेत्तरही रहेन्। आचार्य हेमचंद्र-सूरजे 'निषष्ठिशालाकापुरुषचरित्र' लिखके संस्कृतमें चरित्रकाव्योंको लिखनेका मार्ग प्रशस्त कर दिया, फलतः तेरहवीं शतीसे चरित्रकाव्य संस्कृतमें लिखे जाने लगे। खरतरगच्छके विद्वानोनि भी विशेषतः श्रीजिनपतिसूरजीके शिष्य जिनपाल, पूर्णभद्र और जिनेश्वरसूरजीके शिष्य चंद्र-तिलक, श्रीजिनरत्नसूरि, लक्ष्मीतिलक आदिने कई महाकाव्य रच कर जैन संस्कृत साहित्यका मुख उज्ज्वल किया। प्रस्तुत लेखमें जिनेश्वरसूरजीके ही एक विद्वान् शिष्य श्रीविवेक-समुद्र उपाध्यायके एक महाकाव्यका परिचय दिया जा रहा है।

उपाध्याय विवेकसमुद्रको दीक्षा सं. १३०४ वैशाख शुक्ल १४ के दिन श्रीजिनेश्वर-सूरजीके करकमलोंसे हुई थी। आप श्रेष्ठिवर्य वाहडांगज श्रीबोहित्यके पुत्ररत्न थे, 'नरवर्मचरित्र'की प्रशस्तिमें इन्होने स्वयं इस बातका निर्देश किया है, यह प्रथं भी स्वपितु बोहित्य-जीकी प्रार्थनासे ही निर्माण किया गया था। सं. १३२३ में द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० को जेसलमेरमें श्रीजिनेश्वरसूरजीने इन्हें बाचनाचार्य पदसे अलंकृत किया। सं. १३३९ मिती फाल्गुन शुक्ल ५ को जाबालिपुरसे मंत्री पूर्णसिंह आदि द्वारा ५०० रुक्ट सह निकाले हुए अर्बुदगिरि यात्री संघमें श्रीजिनप्रबोधसूरि व श्रीजिनरत्नसूरजी आदिके साथ आप भी थे और शुक्ल १४ के दिन अर्बुदगिरिमंडण श्रीआदिनाथ और नेमिनाथ प्रभुके दर्शन किये। ८ दिन तक वहीं नाना उत्सव होनेके पश्चात् संघके साथ जाबालिपुर पधारे। सं. १३४२ मिती वैशाख शुक्ल १० के दिन जालौरके श्रीमहावीर जिनालयमें श्रीजिनचंद्रसूरजीने आपश्रीको अभिषेक-उपाध्याय पदसे अलंकृत किया था।¹

आपश्रीने आचार्य श्रीजिनरत्नसूरि, उपाध्याय लक्ष्मीतिलक व उपाध्याय अभयतिलक-

¹ युगप्रधानाचार्यगुरुवाली-(सिंधी जैन ग्रन्थमालासे प्रकाशन)

२३०]

श्री. लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : १८

गणिके पास दोनों व्याकरण, न्यायकंदली, अनेकान्तजयपत्राका, न्यायमुद्धिष्ठण आदि
ग्रन्थोंके अध्ययन करने का उल्लेख किया है। आचार्य श्रीजिनकुशलसूरिजीको आपने विद्याध्ययन
कराया था जिसका उल्लेख 'चैत्यवन्दन कुलकृति'में आचार्यश्रीसे स्वयं इस प्रकार किया है:-

" सन्मौक्तिकस्तवकसेव्यपदोऽनुवेलमस्ताघसंवरधरः कुपथप्रमाथी ।

विद्यागुरुर्मम विवेकसमुद्रनामोपाध्याय इद्वतरत्ननिर्धिर्भूव ॥ "

सं. १३७७में गच्छनायक श्रीजिनचंद्रसूरिजीका स्वर्गवास हो जाने पर श्रीकृष्णालकीर्ति
गणिको आचार्यपद देना निश्चित किया गया तो संघ व विशेषतः श्रीतेजपालने इसके
आचार्यपदोत्सव करनेकी आज्ञा तत्कालीन आचार्य राजेन्द्रचंद्रसूरि व आपश्चेषे ली थी।
'श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास'में इस बातका निर्देश इस प्रकार है:-

" ता गुरु राजेन्द्रचंद्रसूरिवररात ।

सुयसमृद्ध मुनिवररथणु, विवेउसमृद्ध उवज्ञात ॥ ११ ॥

संघ सयल गुरु वीनवए, तेजपालु सुविसेषु ।

पाटमहोच्छव कारविसु, दियह सुगुरु आएसु ॥ १२ ॥

इस उल्लेखसे उस समय आपका गच्छमें कितना सम्मान व प्रेमभाव था मालुम हो
जाता है। आप गच्छमें वयोवृद्ध गीतार्थ और प्रकाण्ड विद्वान् थे। संवत् १३७९ पाटणमें
आचार्यश्री जिनकुशलसूरिजी अपने पूर्व दिये हुए वचनका पालन करनेके लिये भी भीमपछोसे
पधारे और मिती ज्येष्ठ सुदि १४ के दिन श्रीविवेकसमुद्रोपाध्यायका अपने ध्यानबलसे आयुःशेष
निकट जान कर स्वस्थ शरीर होने पर भी चतुर्विध संघके समक्ष मिथ्या दुष्कृत, क्षामणापूर्वक
अनशन करादिया। उपाध्यायजी पंच परमेष्ठिका ध्यान करते हुए 'ज्येष्ठ शुक्ल' के दिन स्वर्ग-
वासी हुए। पाटणके संघने बडे समारोहके साथ उनका स्वर्गोत्सव मनाया और अग्निसंस्कारके
स्थान पर उनके स्मारकरूपका निर्माण कराया। श्रीजिनकुशलसूरिजीने मिती आषाढ शुक्ल
१३ के दिन वासक्षेप देकर प्रतिष्ठित किया।

आपकी रचनाएं

'जेसलमेर-जैनभाण्डागारीय ग्रन्थानां सूची'के प्रस्तावना पृष्ठ ५३ और छंगरजी
मंडासके ग्रन्थोंके विवरणमें आपके रचित 'पुण्यसागरकथानक'का विवरण प्रकाशित हुआ है।
सं. १९९९ में जेसलमेर जानेपर हमने उक्त मंडार देखते हुए अपने संप्रहालयके लिये इस
प्रतिकी प्रतिलिपि करवा ली थी जिसके आधारसे उपाध्याय श्रीमुखसागरजीने श्रीजिनदत्तसूरि

२ प्र. हमारे संपादित ऐ. जै. काव्यसंग्रह.

अंक : १२]

७५। विवेकसमुद्रविरचित नरवर्मचरित्र

[२३१

ज्ञानभंडार—सूरतसे इस कथानकको सं. २००१में प्रकाशिक कर दिया है। इस ग्रन्थकी रचना संवत् १३३४ प्रथम कार्तिक पूर्णिमाके दिन जेसलमेरमें हुई थी, इसकी पद्धतिसंख्या ३४२ है। इतः पूर्व उमेदपुर प्रतिष्ठामें भाग लेकर आगरा जाने पर श्रीयुत काकाजी अगरचंदजीने श्रीविजयधर्मसूरि-ज्ञानभंडिरमें आपके 'नरवर्मचरित'की प्राचीन प्रति देखी थी। जेसलमेर भंडारमें उक्त ग्रन्थकी प्रति अपूर्ण थी अतः यह प्रति अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत हुई। अतः सं. २००२में अपने हथरस फर्मके निरीक्षण-प्रसंगसे आगरा जाना हुआ और उस प्रतिको निकलवा कर आदि, अंत, प्रशस्ति आदि नकल कर ली गयी। इस ग्रन्थका अपर नाम सम्यक्तवालंकार है। जेसलमेर भंडारकी सूचीमें पं. हौरालाल हंसराजकी सूचीके अनुसार प्रस्तावना पृ. ५३में उल्लेख मात्र कर दिया गया है। स्वर्गीय देसाई महोदयके "जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास"में तो इसका उल्लेख नहीं है पर श्रो० वेलणकरने "जिनरत्न-कोश"में आगरेकी प्रतिका उल्लेख किया है पर उन्होने उसे विनयप्रभोपाध्यायवाला ही होगा ऐसा अनुमान कर लिया, जो गलत है। श्रीविनयप्रभोपाध्यायवाला तो ८०० श्लोकका छोटासा ग्रन्थ है पर श्रीविवेकसमुद्रोपाध्यायका प्रस्तुत महाकाव्य ५४२४ श्लोक परिमाणका है। सं. २००२में लिये अपने नोट्सके अनुसार यहाँ परिचय व प्रशस्ति दी जा रही है। इस महाकाव्यके पांच सर्ग हैं और सं. १३२३ दीवालीके दिन संभातमें रचकर पूर्ण किया गया है।

आदि:—

॥ ॐ ॥ अहं ॥ श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

प्रवर्ज्याप्रमदाविवाहमहसि स्कन्धस्थकेशावली-

संकान्तिच्छलतः कपोलबिलस्त्वरस्तूरिकामण्डनः ।

सर्वस्वर्वनिताप्रगीतघवलः सन्मार्गमासेदुषां,

भृत्यानामिह जायतां जिनवरः श्रीनाभिमूः सम्मुखः

कीर्त्या पीयूषवृष्टया भम निस्तिलमसी तापमौर्वीत्थमन्नं,

नूनमन्वेति येभ्यः करचरणनस्यच्छल्यना रत्नरशिः ।

स्वःसन्मन्येऽपि गुप्ता कथमपि हि मणी कौस्तुभं दासयन्ती,

प्रीत्या प्राभृत्यकार्धान्मम ददतु शिवं तेऽजिताद्या जिनेन्द्राः ॥ १ ॥

आयातौ गलहस्तिमृतरुचिच्छत्रयीछलतः,

त्रिश्रोता किल तीर्थमुत्तमतमं यं बाढमासेवितुं ।

उर्वस्वं जडरूपिणी वजति स श्रीवर्द्धमानश्रिये

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

उर्वस्कटाप्रदलकः करुणामृतेनाकण्ठमृतो दशनदीपितीपुण्मालः ।

विश्वत्रयी शिरसि संस्थित आशु भूयाच्छ्रीपार्वपूर्णकलशो मम संसुखीनः ॥ ४ ॥

२३२]

श्री. दैन सत्य प्रकाश

[१५ : १८

श्रीगौतमः सूरजिनेश्वरश्च श्रुतं च जैनं श्रुतदेवता च ।
 चतुष्क्षेत्रं हृदयाङ्गपोथे भुक्ता मयं सिद्धिकृते प्रपूर्यः ॥ ५ ॥
 आमूलाचूलविलसत्सुकृत नरवर्मनायकमहस्कं ।
 सम्यक्त्वालंकारं हृदलंकारं सतां कुर्वे ॥ ६ ॥ युगम् ॥

अन्त्यप्रशस्ति:—

इति श्रीयुगप्रवरागमश्रीजिनपतिसूरजिष्ठितिलकश्रीमज्जिनेश्वरसूरजिष्ठिलेश वाचनाचार्य-
 विवेकसमुद्रगणिविरचिते सम्यक्त्वालंकाराल्ये नरवर्ममहाराजचरित्रे द्वादशवत्कथाप्रतिपादन-
 दुर्दुरुद्धरेवधरश्रेष्ठप्रतिबोधनरवर्ममहाराजस्वर्गगमनव्यावर्णनो नाम पंचमः सर्गः ॥ ७ः ॥ तत्समाप्तौ
 च समाप्तं सम्यक्त्वालंकारास्थ्यनरवर्ममहाराजचरित्रम् ॥ ७ः ॥ ग्रंथाग्रं. १५११ ॥ ७ः ॥

श्रीगौतमस्वामिने नमः ॥ श्रीशारदायै नमः ॥
 सिद्धान्तांश्चन्द्रकान्तान् रसमतिविशदं श्रावयिवाशु तेना-
 ज्ञानान्धान् प्राणभाजः प्रबरतरदशः प्रादधानं प्रकामं ।
 कीर्त्युद्यक्तौमुदीभिर्वलितसकला सांतरालं कुलंश्री-
 सान्द्रं चान्द्रं क्षमायां विघटयतितमां मूलतो दुस्तमांसि ॥ १ ॥
 साधुज्येतिरधीश्वरोऽत्र कुमताधीशां महादंतिनां,
 दंतानामपि मूलतो विरचयन् भंगं च चोरो विषा ।
 भव्यत्रातविलासिनः प्रमदयन् श्रेयःश्रिया खेलतः,
 शिष्योत्तंसमुदे जिनेश्वरगुरुः श्रीवर्द्धमानप्रभोः ॥ २ ॥
 सूरश्रीजिनचंद्र एष नु स्कूर्जत्कलर्दिविभौ,
 सेव्यशश्वदपीश्वरैः स्वशिरसामोदास्पदं सद्वर्णां ।
 दुष्कालोर्जितकोपसर्वविषमाद् बाढं विरक्तो भवात् ,
 सिद्धान्ताव्यिमगाहतामृतकृते योऽहर्निशं हर्षवान् ॥ ३ ॥
 भव्यानां निचयं सदा निदधतः संसारकारागृहे,
 रागाद्यान् भुजाङ्गान् प्रहर्णैर्जिष्णुः समुन्मूल्यत् ।
 तत्पटे द्वुतरंगिणी परिवृटे चारित्रलक्ष्म्यां समं.
 विक्रीडाभयदेवसूरिनिशं सिद्धान्तपीयूषभूक् ॥
 सूरश्रीजिनवल्लभोऽभवदथो विद्याविनीभास्कर-
 स्तत्पटे जिनदत्तसूरिमैरः सेव्यो गणाधीश्वरः ।
 सूरश्रीजिनचंद्र इन्द्रवदहो सनाकलोकस्तुतः,
 श्रीसत्त्वसामुपतिस्ततो जिनपतिः सन्तप्रपृथीपतिः ॥ ५ ॥

अंक : १२]

७५। विवेकसमुद्रविश्चित नरवर्मचारिणी

[२३३

नानानलयविकल्पजालहरीले यदीये वचो—
 वास्त्रे वादिवरा ध्रुवं निपतिताः संसद्वकण्ठान्तराः,
 प्राप्तो निग्रहभूमिकामपि परं पारं समीयुस्तरां,
 यत्या द्वितयं प्रणामतरणीमासाद्य सद्यः परं ॥ ६ ॥

सारालंकृतिभिर्विद्यग्वहदयानंदश्रियां खानिभिः,
 विद्याभिः कमलेक्षणाभिरनिशं ऋडत्तमः संमदात् ।
 निस्वानोर्जिततर्जितांबुदवरः ध्यातक्षमाभृत्पतिः,
 श्रीमान् सूरजिनेश्वरो विजयते तत्पद्मसिंहासने ॥ ७ ॥

दुष्टेष्टववकारिणा कलिमहाभूतेन विशेषस्थिले,
 व्याक्रान्ते निरुपदवाः पटुतमा विद्याः समस्ताः सुखम् ।
 दक्षिण्योपशमोपकारपरता मुख्यैर्गुणैर्मन्त्रिकै—
 रुद्युक्तैः परिस्थिते दिननिशं तिष्ठति यत्के पुरे ॥ ८ ॥
 प्रसुत्वपापिडत्यकवित्वशान्ततामुख्यैरसंख्यैरसमैर्गुणैर्वृत्तम् ।
 प्रजापतेर्य सृजतोऽनुविस्मृता वार्ष्णक्यतस्तुर्ययुगस्य निर्मितिः ॥ ९ ॥

प्रौढं प्रातवतोऽधुना कलिरिपोविभ्यत्करामोहुहे,
 यत्के सत्त्वमहानिधौ कृतयुगं नूनं प्रविष्टं सदा ।
 विद्वत्ताकविताधनिवजनतापूज्यत्वकीर्त्यादय—
 स्तत्परेऽवतरंति यत्सुकृतिनामैदंयुगीना गुणाः ॥ १० ॥

त्रैविद्यचूडामणयो यदीयाः शिष्याः सहस्रांशुकरा इवोन्याः,
 तमोपहाः श्रीजिनश्नूरिमुख्या विराजंति विभास्वरंगाः ॥ ११ ॥

यच्छिष्यौ श्रीलक्ष्मीतिलक—श्रीअभयतिलकनामनौ ।
 अभिषेकशिरोमण्यौ बहुप्रबन्धासविधियशसौ ॥ १२ ॥

अध्यापयेतां पितृवन्नितान्तं सदाहितौ व्याकरणद्वयीमाम् ।
 कन्दल्यनेकान्तजयथवजौ च न्यायाम्बुविखण्डनमुख्यतर्कन् ॥ १३ ॥ युग्मम् ॥

तच्छिष्यलवोऽस्मि विवेकसमुद्राभिरुद्यवाचनाचार्यः ।
 सम्यक्तवालंकारचरितं नरवर्मभूमिपतेः ॥ १४ ॥

गुरुणामुपदेशेन रचयामासिवानिदम् ।
 वाहडांगजबोहिथः स्वपितुः प्रार्थनावशात् ॥ १५ ॥ युग्मम् ॥

वाणीदग्गविश्वशीतांशुसंख्ये विकसवत्सरे ।
 स्तंभतीर्थपुरे दीपोत्सर्वपूर्णमदोऽभवत् ॥ १६ ॥

१३४]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[खण्ड : १८]

अक्षयशास्त्रवरपायसपूर्णं शिष्यव्याजेन सत्रसदनान्यनिवारितानि ।
 निर्माय येन वरसंगुणपालिष्वन्धं प्रत्येकबुद्धचरितं विदधीकरोत् ॥ १७ ॥

श्रीमन्तो जिनरत्नसूरितिलका विदाविष्पारोणतां,
 प्राप्ता दर्शनषट्कतर्कजलघौ कुंभोद्धवस्पद्धिनः ।
 शब्दार्थादिकदोषकश्मलमपीदं शास्त्राताम्रं निजै—
 वीक्ष्यशान्नरसैः सुवर्णममलं ते लीलया निर्ममुः ॥ १८ ॥ युग्मम् ॥

श्रीलक्ष्मीतिलकाभिषेकतिलकरत्तचकलाकौशल—
 क्रीडावेशम् सुवर्णकुण्डलालंकारश्वंगासितम् ।
 तावत् कीर्तिविभूषणोत्तममहः संभूषितक्षमातलः
 सर्वेषां श्रवणोचितं व्यरचयच्छाङ्गं सुवर्णं वदः ॥ १९ ॥

अस्य प्रती द्वे प्रथमे शुभाक्षरे स्वर्गायपवर्गादिरयो वैशाक्षतिं ।
 कर्तुं तु यंत्रेऽलिखत् संसंमदः श्रेयःप्रियो रत्ननिधानसूरिः ॥ २० ॥

ताते तनूभूरि व चारुभक्तिरस्मास्वदःशास्त्रसुपुस्तिकानि ।
 प्रपाङ्गुसद्धर्मसुधारसस्य व्यधत्त धीमान् गणिहेमसेनः ॥ २१ ॥

यावद्वारिनिघौ क्षितिप्रवहणं हेमाद्रिकूपोच्छूतं,
 स्वर्गायाविलसन्महासितपटं चन्द्रार्कनिर्यामकम् ।
 रन्मं क्षोणिधरादिपण्यकलितं भाव्य………दण्डध्वजं
 तावच्छास्त्रमिदं प्रणादतुतरां संसेव्यमानं बुधैः ॥ २२ ॥

ग्रंथाग्रं सर्वसंख्या ५४२४ श्रीरस्तु छः ॥ श्रीशुभं भवतु ॥ लेखकवाचकस्य ॥

प्रतिपरिचयः—पत्रसंख्या १३८, चौदहवीं शतीके उत्तरार्द्धकी प्रति; अंतिम पत्र १६वीं शतीका । किनारे ताङ्गत्रीयाङ्क; प्रथम पत्र एक तरफ, १ पृष्ठमें १३ पंक्ति, प्रयेक पंक्तिमें ५१—५२ अक्षर, प्रशस्तिके १८वें श्लोकके अंतिम ५ अक्षर और बाकीका अंश अंतिम १६वीं शतीवाले पत्रमें हैं । १०७वें पत्रमें दोनों तरफ १२—१२ पंक्ति हैं और १६वीं शतीका है । बीच बीचके कुछ पत्र भिन्न रंगोंमें रंगे हुए और शेष अक्षरों व कुछ पीले अक्षरमें लिखे हुए हैं ।

ग्रन्थ प्रकाशनके योग्य है । आगेरेसे प्रति प्राप्त कर इसकी प्रेसकापी करनेका प्रयत्न चालू है । जैसलमेरकी अपूर्ण प्रति व इस प्रतिके अतिरिक्त कहीं इसकी प्रति हो तो जानकार महोदय सूचित झरनेकी कृपा करें ।



बम्बई मण्डन श्रीचिन्तामणि प्रतिष्ठा स्तवन

संपा० श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा

बम्बईके श्रीचिन्तामणिजीके मन्दिर निर्माण सम्बन्धमें दो-तीन वर्ष पूर्व हमसे पूछा गया था, पर उस समय इस सम्बन्धमें कोई प्रामाणिक साधन स्मरण नहीं था। हमारे मंदिरोंके निर्माणादिके सम्बन्धमें बहुत बार तो वहां प्राप्त शिलालेख, मूर्ति-लेखादिके आधारसे निर्णय हो जाता है पर कई मन्दिर ऐसे भी हैं जिनके निर्माणादि सूचक शिलालेख प्राप्त नहीं होते और मूर्तियोंके लेख पृष्ठ भागमें होनेसे या पच्चीमें दब जानेसे पढ़नेमें नहीं आते। कई मन्दिरोंमें मूलनायकादि प्रतिमाएं अन्य स्थानोंसे लाकर विराजमान की जानेके कारण उनके लेख भी मन्दिरके इतिवृत्त जानेमें सहायक नहीं होते। वहां एक मात्र साधन पुराने कागजात या समकालीन बने स्तवन ही होते हैं। बम्बईका चिन्तामणि मन्दिर कोई अधिक प्राचीन नहीं, फिर भी १२५ वर्ष हो जानेसे उसके पुराने कागजात संभव है उसके निर्माणादिके सम्बन्धमें निर्णय न दे सकते हों इसीलिए समकालीत स्तवनादिकी खोज की गयी। हमें यह तो विदित था कि खस्तरगच्छीय वाचक अमरसिंधुरजी सं. १८८०के लगभग बम्बई जाकर कई वर्ष रहे थे और वहां उनके रचित कुशलसूरिस्थाननामगर्भित स्तवन गा. ६५, प्रदेशी चौपाई, एवं नवाणुं प्रकारी पूजा आदि भी ज्ञात थे। हमारा अनुमान था कि उन्हींके उपदेशसे श्रीचिन्तामणिजीका मन्दिर स्थापित हुआ हो। अभी इसकी पुष्टि हमारे संग्रहके एक गुटके, जिसमें उनके रचित अनेक पद हैं, में प्राप्त चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवनसे हो गई है। यह गुटका सं. १८८८में बम्बईमें ही उन्होंने अपने शिष्य रुपचंद और आनंदके लिए स्वयं लिखा था। इसके ग्रारंभिक २९ पत्र प्राप्त नहीं हैं इसलिए इनकी बहुतसी रचनाएं (जिनकी संख्या ३९ थी व ४०का कुछ अंश भी नहीं है) प्राप्त न हो सकी, फिर भी प्राप्तपत्रोंमें भी शताधिक रचनाएं हैं। अंतमें जैसलमेरके पटवोंके संघके वर्णनकी तीर्थमाला है, जो लिखते हुए छोड़ दी गयी है। चिन्तामणि पार्श्वनाथजीके भी इसमें अनेक स्तवन हैं। और भी उनके षष्ठादि उत्तम होनेसे प्रकाशन योग्य हैं जिनका प्रकाशन चिन्तामणिजी मंदिरके ट्रस्टियोंको करवाना चाहिए। यहां तो हम केवल उसी स्तवनको प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें इस मंदिरके निर्माता और प्रतिष्ठापक आदिका वर्णन है।

यद्यपि प्रतिष्ठाका संवत् नहीं दिया है पर वह निम्नोक्त विचारणासे निर्णित हो जाता है।

इस स्तवनके ९वें पदमें अमरसिंधुरजीके ८ वर्षकी प्रेरणा व प्रयत्नसे इस मंदिरका

२३६]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[१८५ : १८

निर्माण व प्रतिष्ठा होनेका उल्लेख है और गुटकेकी निस्नोक्त लेखनप्रशस्तिसे सं. १८८८में बम्बईमें अमरसिंधुरजीका ११वां चातुर्मास चल रहा था, बतलाया गया है। इसलिए इस जिनालयकी प्रतिष्ठा संवत् १८८५में होनी चाहिए। पुष्टिका यह है—“ संवत् १८८८ वर्षे मिती फागुण सुदि ९ रवौ श्री मंवुई विदरे एकादशमी चतुर्मासी कृता । लिखत वाचक अमरसिंधुरगणि पं. रूपचंद पं. अणदावाचनार्थी श्रीबृहत्खरतरभट्टारकगच्छे श्रीजिनकुशलसूरि शास्त्रायां । ”

(मोरा साहिब हो श्रीशीतलनाथक पहनी ।)

सुखदायक हो चिन्तामणि साम कि मंवुईपुर मनरंग नमो ।

दरसण कर हो लहो नयणानंदकि दुख दोहग दूरे गमो ।

पावडीया हो तिहां सात प्रसिद्ध कि देवल चढतां दीपता ।

दोय पासै हो प्रतिहार प्रधान कि जुगतै अरिगण जीपता ॥ १ ॥ सु० ॥

उपासै हो अतिशोभ उदार कि खरतरगच्छ चढती कला ।

सदगुरुजी हो श्रीकुशलसुरिंद कि पूजैजै पगला भला ।

पटधारी हो प्रणमी गुरु पायक लायक गुरु गुण दीपता ।

भवि बोधक हो शोधक क्रम जाण कि पंचेन्द्रिय विष जीपता ॥ २ ॥ सु० ॥

दिस दोए हो पावड़िय प्रधान कि सुंदर अति सोहामणी ।

चढि चौपै हो लहो परमाणंद कि देवल छवि सोहावणी ।

जक्षराजा हो चिन्तामणि जाणि क चितनी चिन्ता ते हैरे ।

गुणवंता हो गोरल बड़वी कि भोग सुजस लखमी भैरे ॥ ३ ॥ सु० ॥

मनगमती हो भमतीय भमंत कि मंदिर शिखर सोहांबणो ।

घज दंडै हो सोहै श्रीकार कि कलश कंचन रलियामणो ।

बिहुं पासै हो अति उन्नत जाण कि ध्रमशाला दीपै भली ।

ध्रम कारण हो करिवानै काज क देस्यां पूरै मन रली ॥ ४ ॥ सु० ॥

मूलनायक हो राजे महाराज कि श्रीचिन्तामणि सुखकरु ।

उपगारी हो त्रिभुवन आधार कि दरसण दुख दोहग हरु ।

तेवीसम हो जग तारक जाणकि दोहग दुरति निकंदणो ।

पुण्य योगै हो लायक सुविलासके दरसण लहय राजिंद नौ ॥ ५ ॥ सु० ॥

सुविवेकै हो मिलि चौविह संघ कि विनय सहित वंदन करै ।

पूजा विध हो प्रह समय उदार कि करतां पुष्य दशा भैरे ॥

पदमावति हो पूरै मन आस कि श्याम भैख सुप्रसन सदा ।

आराध्या हो आवै अधिक आणंद कि प्रघल दीयै सुख संपदा ॥ ६ ॥ सु० ॥

[जुओ : अनुसंधान पृ४ : २३८]

प्रभासपाटणना शिलालेखो

[गतांकथी पूर्ण]

सं. पू. मुनिराज श्रीचन्दनसागरजी

अति भूनी थर्ध गयेली पंचधातुनी सपरिक्षिवाणी
नानी प्रतिभाष्या उपरना देखा।

२०—‘१३०९ वैशाख सु० ३ बुधे श्रीब्रह्माण गा० श्रै० रा..... श्रेयोर्ध्वं पुत्रसंताकेन
श्रीशान्तिनाथविंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीप्रद्युम्नसूरिभिः ॥’

२१—‘सं० १०५५ वर्ष वैशाख वदी १२ शुक्रे ऊकेशवंशो शा..... गच्छेश श्रीमेरु-
तुंगसूरीन्द्राणामुपदेशेन मातृश्रेयसे श्रीपार्वत्नाथविंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।’
आ भूर्तानी भाषण चोपदार दृढ़ लक्ष्मि ज्ञेया छे।

२२—‘सं० १४९२ वै० सुदि ५ शुक्रे श्रीकोरण्टकगच्छे उपकेशज्ञातोय सा रतनसी भार्या
देलणसुत वाढाकेन स्वपित्रोः श्रेयसे श्रीशीतलनाथविंवं कारितं श्रीकक्षसूरिपटे श्रीसाधुदेवसूरिभिः ।’

२३—‘सं० १३०२ वै० शु० १५ श्रै० उदाशासुतेन श्रै० सोहनेन पित्रोः श्रेयसे
× × कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसिंहदत्तसूरिभिः ।’

२४—‘वि० सं० १३७० वैशाख सुदि २ श्रीमालीज्ञातीयपितृश्रे..... रतनसीहमातृ
रणादेवी श्रेयसे श्रेयसे..... श्रीआमदेवसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिजिन कारित.....’

२५—‘वि० सं० १३२२ वैशाख वद् ७ बुधे श्रीनागरगच्छे श्रीप्रद्युम्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं
पार्वत्विंवं कारितं.....’

२६—‘सं० १२२० फाल्गुन सुद १२ गुरौ स्वदुहितृ श्रेयादेवी श्रेयोर्ध्वं सहनीकया
पुत्र.....’

२७—‘वि० सं० १२८८ वर्ष वैशाख वदि..... श्रीमहावीरविंवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीजिनेश्वरसूरिश्यायैः श्रीजरासिंहसूरिभिः ।’

२८—‘वि० सं० १२८२ फाल्गुनमासे..... पछीबाल गोसलपुत्र्या दाहुनाम्न्या
पार्वत्नाथविंवं कारितं श्रीजिनेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठितमिदं ।’

२९—‘वि० सं० १४२६ वर्ष वैशाखे श्रीश्रीमालीय..... श्रीआदिनाथविंवं कारितं
प्रतिष्ठितमिदं श्रीजिनचन्द्रसूरिपटालकौरैः श्रीजिनोदयसूरिभिः श्रेयसे भवतु ।’

३०—‘सं० १४२६ वैशाख वद् ५ शनौ श्रीमालय..... श्रेयोर्ध्वं भ्रातृमदनेन
श्रीशान्तिनाथविंवं कारितं श्रीअभयसिंहसूरीणामुपदेशेन शा.....’

३१—‘सं० १२६२ आगमगच्छे ओसवाल सा० काहीकेन मातृदेलहणनिमित्तं श्री...
..... सूरित्पदेशेन विंवं श्रीशान्तिनाथस्य कारितं सूरिभिः प्रतिष्ठितं—

२३८]

श्री लैन चत्य प्रकाश

[वर्ष : १८

—नवां भरायेलां बिघ्याभाना अङ्क बिंधनो देख—

३२—श्रीअजितनाथप्रभुना बिंब विषेनो लेख—

पुठे—वीरसं० २४७८ वर्षे माघ शु० ५ गुरौ श्रीचन्द्रसागरसूरिणाऽजितमिदं श्रीअजित-
नाथबिंबमिति शुभम् ।

पलांठी नीचे—वीरसं० २४७८ वर्षे २००८ विकमार्के माघशुक्लपञ्चमी गुरौ श्रीचन्द्र-
प्रभासतीर्थे चन्द्रप्रभस्वामिग्रासादे श्रीदेवसुरतपागच्छसंरक्षकागमोद्वारकाचार्यसागरानन्दसूरीशपट्ठ-
धरसिद्धचक्रारोधनः तीर्थोद्वारकाचार्यश्रीमचन्द्रसागरसूरिकृताञ्जनशलाकायां श्रीअजितनाथस्वामि-
बिंबं प्रभासपत्तनस्थं श्रेष्ठिदेवजीभाइसुत-अमरचन्द्रभार्याजमनाबादाइसुत जेठाभ्रातुमौंघीपल्या हीरा-
चन्द्र, प्रेमजीभाह, मगनलाल, पानाचन्द्रेति चत्वारः पुत्राः तन्मध्ये पानाचन्द्रभार्या पानकुंवरसुत
कान्तिलालस्तथा पुर्यस्तारामति-- कलावति-भद्रमणि-नयनबालादिपरिवारैः श्रीसंवश्रेयोऽथ-
मङ्गितमिति शुभम् ॥



[अनुसंधान पृष्ठ : २३६ थी थालु]

चढ़ि चौमुख हो चंद्राप्रभु चंग कि, अजित सुमति संभव सही ।

भल दरसण हो करतां शुभ भाव कि जात्र पुण्य पामै सही ॥

कोठारी हो कुल मण्डण जाण कि अमरचंद्र चढती कला ।

भाई भल हो वृद्धिचंद्र सुजाण कि हीराचंद्र सुत तसु भला ॥ ७ ॥ शु० ॥

देवल भल हो दीपायो जेण कि देवसुवन सम दीपतो ।

अति ऊंचो हो सोहै श्रीकार क मोह मिथ्यामत जीपतौ ॥

भल लीधो हो लखमी नो लाह कि पुण्य मंडार भरावियौ ।

ध्रमधोरी हो गावै गुणवंत कि जग जस पडर बजावियौ ॥ ८ ॥ शु० ॥

गच्छ खरतर हो गणधर गुणवंत कि हरखसुरीसर हितधरू ।

आणाघर हो वाचकपद धार कि अमरसिन्धुर महिमा वरू ॥

ए उद्धम हो करतां मनरंग कि वच्छर आठ बोलावोया ।

प्रतिष्ठा हो कीधी सुप्रधान कि गुणीयण मिल गुण गावीया ॥ ९ ॥ शु० ॥

ए मिंदर हो रहो अचल आणंद कि थिर जिम सुरगिरि सालता ।

चिन्तामणि हो पूजेज्यो जाम कि अधिक वधेज्यो आसता ॥

सुप्रसन मन हो सेवो प्रभुपाय क त्या सुप्रसन जदा तदा ।

हुवो या घर हो सुख संपति धाम क वधज्यो मंगल मालिका ॥ १० ॥ शु० ॥

१ गुटकेमें अन्यत्र सूरतसे इन प्रतिमाजीके बाबूई आनेका सूचन हैः—‘ सूरतथी भल साहिबा
हो मंदुई बिदर महाराज आया इहां आणंद सु सहुना सीधा काज ।’

‘श्री जैन सत्य प्रकाश’नुं

अदारमा वर्षनुं विषय-दर्शन

प्रतीकार

आथू-राणुकपुरनां जगभक्षिद्ध होरा;

भूलभरेली मुस्तिकामोनो। अचारः :

श्री. जयभिष्मु :

१७०

प्रतिकारः प्रभुश्री महावीरहेव अंगेना।

अथेऽथ लभाणुनो रहयो :

(एक भिन्नना पत्रभाषी) :

१६५

प्रतिकारना पगवा अने सङ्खलता :

संपादकीय :

२१६

निवेदन अने प्रासंगिक नोंद्धु

प्रासंगिक नोंद्धु-अदारमा वर्षो :

संपादकीय :

१

निवेदन :

प्रभावना अंगेनुं सुलभ साधन :

श्री. भोजनलाल ”दी. चोकसी” :

१६३

जैन समाजने येतवणु :

श्री. पं. लालचंद्र अ. गांधी :

३

एक डैदरथ संस्था :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

२७

डैदरथ संस्था डेवी लेझिंग्रे :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

२८

शैक्षण्य-समिति :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

५०

वैशाली संघ :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

७८

नाउपनीय यानलंडारो :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

१०१

विनाति :

श्री. भोजनलाल दी. चोकसी :

२१०

संपादकीय : अंक : १२ टाइटल पैज २

साहित्य

आचार्य सिद्धसेन :

श्री. वसंतलाल कृतिलाल :

१६

श्री. महावीर रहुति दाविंशिका :

पू. पं. श्री हुरंधरविजयलु :

१७

(श्री. सिद्धसेन दिवाकरकृत)

ज्ञन शैक्षणना सोपान संघर्षी जैन

पू. पं. श्री हुरंधरविजयलु :

तेमज अन्नेन भंतव्ये। (गत वर्षीय चालु) : श्री. श्री. दीरालाल २. कापडिया २१, ४१, ६८

एक सवित्र कल्पसूत्र (सं. १५६५) -

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

की प्रश्नस्ति :

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

१८

भेदग्रन्थ :

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

३०

आपणा महाजनो :

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

३१

स्नातपूल :

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

३२

समराईव्यक्ता (परिचय) :

पू. पं. श्री. हुरंधरविजयलु :

३३

पूर्वदेश-चैत्यपरिपाठी

(श्री. जिनवर्जनसूरिकृत)

भूषणिता

सं. श्री. अगरवालजी नाहटा :

७२

श्री. वसंतलाल कृतिलाल :

६४

२४०]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : १८

अहिंसानो प्रभाव :

श्री चंत सरकार सत्याग्रह भक्तिमाना

६७

यार महापुरुष :

प्रवचनमूर्थी :

६८

जात्यंध पुरुषों द्वारा हस्ति स्वरूप
के घर्णनवाला दृष्टांत क्या

बौद्धग्रंथसे लिया गया है ?

श्री. अगरचंद्रजी नाहटा :

१०७

वर्षीतपनो भड़िमाँ :

पू. आ. श्री. विजयभूमिरिजु :

१११

धृष्टिरीतत्व :

श्री. वसंतलाल कृतिलाल :

१२३

षट् दर्शनियोंके १०२ नाम :

श्री. अगरचंद्रजी नाहटा :

१४२

कहुआ मत पट्टावलीमें उल्लिखित

उनका साहित्य :

”

१६३

धर्मशिक्षण अने साधुओं :

श्री. अमृतलाल कालीदास देशी :

१६५

शूरावैराग्यतरंगियों (परिचय)

पू. श्री. पं. धुरधरविजयलु :

१८१

हेम इतिहासा भारिकदीय उल्लेखों

अने अवतरणों :

प्रै. श्री. डीरालाल र. कृष्णिया :

१८५

मानवतानो भूक्त सदैश :

पू. पं. श्री. कनकविजयलु गण्यु :

१८७

सोभसाक्षात्यतुं अवलोकन :

प्रै. श्री. डीरालाल र. कृष्णिया :

२०५

परिग्रहतुं पाप :

पू. मु. श्रीयंद्रप्रभसागरलु :

२१७

श्रुते अने श्रवण दो :

पू. मु. ६ संसागरलु :

२२३

उपाध्याय विवेकसमुद्र विरचित

तर्त्वमच्छित्र :

श्री. भंवरलालजी नाहटा :

२२९

बंबहमंडन श्रीचितामणि प्रतिष्ठा स्तवनः श्री. अगरचंद्रजी नाहटा :

२३५

तात्त्वशान

प्रश्नोत्तर डिरेक्टरी :

(गत वर्ष : १७ : अंक : १२ थी) श्री. विजयभूमिरिजु :

४६, १५६

गर्दमी विद्याका वैज्ञानिक आविष्कार :

डॉ. बनारसीदास जैन. पम्. प. पीपचू डी.

११३

जैन दर्शनों डर्मसिद्धात अने ऐनु-

तुलनात्मक अवलोकन : डौ० श्री. डीरालाल रसिकदास कृष्णिया

११५, १५२

निर्णय अन : पू. मु. श्रीयंद्रप्रभसागरलु

१४५

छत्तिलास-पुश्तात्म-संशोधन

टेलीक नैन अतुश्रुतियों अने पुगतर्त्व :

(गत वर्षीय यात्रु) डॉ. भोलीयंद्र अम. ए. पीमेय. डी.

११, ११, ४५

कृतिपय आवश्यकीय संशोधन : श्री. अगरचंद्रजी नाहटा

५२

मुश्त्रा-व्यापारनो सुसंगत अर्थ : श्री. पं. लालयंद्र अ. गांधी

८३

राणकपुर, तारंगा, नाहुलाई व नद्दूलके		
कतिपय लेख :	श्री. भंवरलाल नाहटा	८९
पूर्वदेश चैत्यपरिपाठी :	"	१०९
साह राजसी रासका एतिहासिक सार		
श्री. मेघमुनि रचित :	"	१३७
संधापति विस्तरी विशेष शिद्धपृष्ठियोः पं. श्री. यीमनलाल लक्ष्मुभाई झवेरी		१४७
प्राचीन तीर्थ यंद्रप्रभास पाटण अने		
ग्रन्थिमा लेखोः	पू. मु. श्रीयद्दनसागरण १११, १६०, २१६, २३७	
पुरातन वैशाली अने तेना अवशेषोः पं. श्री. यीमनलाल लक्ष्मुभाई झवेरी		१७५
खेडके जैन शिलालेखोः श्री. अगरचंदजी और भंवरलालजी नाहटा		१८७
राजधानी मणी आवेदी श्रीपार्थनाथ भूर्तीः श्री. इष्टुदत वाङ्मेयी अंकः १०		
	टाईटल पेज	३
साहुचंद्रकृत तीर्थराज चैत्यपरिपाठीका		
समयः	श्री. भंवरलालजी नाहटा	२१२
खेडके शातिजिनालय संबन्धी डललेखः श्री अगरचंदजी और भंवरलालजी	नाहटा	२१४
	वार्ता-कथा	
सिंहपुरुषः	श्री. ज्येष्ठभ्यु	५
पतिपानवनः	"	५५
श्री. महावीर अने गोशालकः	"	१२५
मानसिक पापनी लक्ष्यकरताः	पू. मु. श्री. भहाप्रभविजयण	२०१
	प्रक्लीण	
सने १६पानो नेशनल मोन्युमेन्ट्स अंकट ७१ः	टाईटलपेज	३
समितिमा पांचमा भुनिसभ्यती निमण्डुकनो पत्रवहार		
अंथ स्वीकारः अंकः ४-५	टाईटल पेज	२
अंकः ८ टाईटल पेज ३, अंकः ११ टाईटल पेज २		



Shri Jaina Satya Prakasha, Regd. No. B. 3801 श्री जैन सत्य प्रकाश

श्री जैन सत्य प्रकाश

अंगे सूचना

योग्यता

१. श्री. जैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति द्वारा 'श्री. जैन सत्य प्रकाश' मासिक १७ वर्ष थर्या प्रगट करवामां आवे छे.

२. ए समितिना आजुवन संरक्षक तरीके दि. ५००४ आ० हाता तरीके दि. २००१ आ० सहस्र तरीके दि. १०११ राखवामां आवेवा छे. आ रीते मद्द आपनारने मासिक डायमने भाटे भेक्षलवामां आवे छे.

विनांति

१. पूर्ण आयार्थि भुनिवरो चतुर्भासनु स्थण नक्षी थतां अने शेष काणभां न्यां विहरता होय ए स्थणनु सरनामुं मासिक प्रगट थाय एना १५ दिवस अगाउ भेक्षलता रहे अने ते स्थणे आ मासिकना प्रयार भाटे आहो जनाववानो उपहेश आपता रहे एवी विनांति छे.

२. ते ते स्थणेभासी भणा आवतां प्राचीन अवशेषो डे ऐतिहासिक माहिनीनी सूचना आपवा विनांति छे.

३. जैनधर्म उपर आक्षेपान्मक लेखा आहिनी सामग्री अने माहिनी आपता रहे एवी विनांति छे.

आहोकाने सूचना

१. "श्री जैन सत्य प्रकाश" मासिक प्रत्येक अंगेगु महिनानी १५भी तारीखे प्रगट थाय छे.

मुद्रक : गोविंदबाल जगरीआई शाह, श्री शारदा मुद्रणालय, पानडोर नाडा, अमरावाद.

प्रकाशक : वीमनबाल गोडाहास शाह.

श्री. जैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति कार्यालय, लेशिंगभाईनी वाडी, वीकांडा रोड-अमरावाद.

२. आ मासिकतुं वार्षिक लवाजम दि. ३१ नवृ इपिया राखवामां आवुं छे.

३. मासिक वी. पी. थी न भंगावतां लवाजमना दि. ३१ मनीआईरदारा भेक्षली आपवाथी अनुद्देश्यता रहेशे.

४. आ मासिकतुं नवुं वर्ष दिवाळीथा शह थाय छे. परंतु आहो गमे ते अंकथा अनी शक्य.

५. आहोकाने अंक भेक्षलवानी पूरी सावचेती राखवा छतां अंक न भणे तो स्थानिक पेस्ट ऑहिसमा तपास कर्या पछी अभने सूचना आपवी.

६. सरनामुं बदलाववानी सूचना ओणामां ओणा १० दिवस अगाउ आपवी जडी छे.

लेखकाने सूचना

१. लेखा कागणी एक तरह वांची शक्य तेवी रीते शाईथी लभी भेक्षलवा.

२. लेखा टूंका, मुद्रासर अने व्यक्तिगत शिकायत न होवा जेई अ.

३. लेखा प्रगट करवा न करवा अने तेमा पत्रनी नातिने अनुसरीने सुधारोवधारो करवानो होत तंत्री आधीन अ.